વલ્લભ વેદાંત

ડો. જયેન્દ્ર સોની

વલ્લભ વેદાંત

(*"વલ્લભ વેદાંત"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

" वल्लभ वेदांत" (१)

****

दुनियाना प्रत्येक धर्मो ना पायामां कोईक दार्शनिक विचारधारा रहेली होय छे जे तेना स्थापक द्वारा प्रतिपादित करवामां आवेली होय छे. तेनो आधार ते धर्म नो विशिष्ट 'धर्म ग्रंथ' होय छे, जेमां ते धर्मना स्थापक गुरु द्वारा उपदेश आपवामां आवेला होय छे, अर्थात् तेओ तेना रचयिता होय छे. आथी विपरित हिंदु सनातन धर्म नो मुख्य ग्रंथ छे - 'वेद', जेनी रचना कोई व्यक्ति विशेषे करेल नथी. प्राचिन रुषि मुनीओए समाधिमां श्रवण करेली ते वाणी छे. तेथी तेने 'श्रुति' कहेवाय छे. ते 'अपौरुषेय' छे, अर्थात् ते कोई पुरुषे रचेल नथी, स्वयं भगवान नी वाणी छे. आंतर्स्फुरणाथी प्राप्त करेल तु ग्यान छे. रुषिओए करेला आंतर्दशन ने लीधे तेने 'दर्शन' पण कहे छे.

वेद व्यासजी ए वेद ना समग्र ग्यान ने संकलित करी चार वेदो मां विभाजित कर्या छे - १ रुग्वेद, २.यजुर्वेद, ३.सामवेद, ४. अथर्ववेद. प्रत्येक वेद मां चार विभाग छे. १. मंत्र अथवा संहिता, २. ब्राह्मण (गद्य). आ बन्ने ने 'पूर्वकांड' अथवा "कर्मकांड" कहे छे, जेमां अनेक यग्य - यागादि ना विधान छे. तदुपरांत - ३.आरण्यक, ४.उपनिषद. तेने 'उत्तरकांड' अथवा 'ग्यानकांड' कहेवाय छे. तेमां ब्रह्म, जीव, जगत ईत्यादि नी मिमांसा करवामां आवी छे.

उपनिषद वेद नो अंतिम भाग तेमज तेना सार रूप होई, तेने "वेदांत" पण कहेवाय छे. व्यासजीए समग्र वेदांत ना ग्यानने ५५४ (शंकराचार्यजी ना मते५५५) सुत्र रुपे रजु कर्या छे, जे "ब्रह्मसूत्रो" तरीके ओळखाय छे.

ब्रह्मसूत्रो सामान्य मनुष्य ने माटे समझवा मुश्केल छे. तेथी तेने समझाववा शंकराचार्यजी ईत्यादी आचार्योए तेना पर 'भाष्य' (तर्कपूर्ण विवेचन) नी रचना करी छे. प्रत्येक आचार्य ना भाष्य तेमना द्वारा करवामां आवेलुं 'वेदांत' (उपनिषद) नु अर्थघटन होई ते तेना रचयिता आचार्यना वेदांत ना नाम थी ओळखाय छे. तदनुसार शंकराचार्यजी ना भाष्य ने 'शांकर भाष्य' अथवा "शांकर वेदांत" कहेवाय छे, रामानुजाचार्यजीनु भाष्य "रामानुज वेदांत" तरीके जानीतुं छे, तेमज श्रीवल्लभाचार्यजी ना भाष्य ने 'अणुभाष्य' अथवा "वल्ल्भ वेदांत" कहेवाय छे.

श्रीवल्लभाचार्यजीनी दार्शनिक (तात्त्विक) विचारधारा समझवा माटे 'वल्लभ वेदांत' नो अभ्यास आवश्यक छे, कारणके तेमने प्रवर्तित करेल "पुष्टि भक्तिमार्ग" ना पायामां तेमनी दार्शनिक विचारधारा "अखंड ब्रह्मवाद" छे, जेने आपणे "शुद्धाद्वैत वाद" तरीके ओळखीये छीये. ते तेमनुं "तत्त्व दर्शन", विचार / सिद्धांत पक्ष छे, ज्यारे 'पुष्टिमार्ग" तेमनुं "धर्मदर्शन", अथवा आचार/ व्यवहार पक्ष. ......क्रमशः........ (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२)

****

विभिन्न आचार्योए भगवद् शास्त्रो - वेद, गीता, ब्रह्मसूत्रो ना आधारे पोतपोतानी दार्शनिक विचारधाराओ प्रतिपादित करी जीव-जगत-जगदीश ना स्वरुपने समझाव्या छे. तदनुसार प्रत्येक आचार्य ना जुदा जुदा मत छे. १.शंकराचार्यजी - "केवलाद्वैत वाद" / "मायावाद", २.रामानुजाचार्यजी - "विशिष्टाद्वैत वाद", ३.मध्वाचार्यजी - "द्वैतवाद", ४. निम्बार्काचार्यजी - " द्वैताद्वैत वाद", अने वल्ल्भाचार्यजी - "शुद्धाद्वैत वाद" / "ब्रह्मवाद". इनमें शंकराचार्यजी ए 'ग्यानमार्ग' नुं प्रवर्तन कर्युं छे, बाकीना चारेय आचार्यो 'भक्तिमार्ग' ना प्रवर्तक हतां.

तेवीज रीते विभिन्न रुषियो द्वारा 'दर्शन शास्त्रो' प्रस्तुत करवामां आव्या छे, जेमां जीव, ईश्वर, जगतना स्वरुप नुं चिंतन करवामां आव्यु छे. एवा छ वैदिक दर्शनो - " षड दर्शन" अस्तित्वमां आव्या छे - १."सांख्य" - कपिल मुनि, २."योग" - पातांजली मुनी, ३."न्याय" - गौतम रुषि, ४."वैशेषिक" - कणाद रुषि, ५. "मीमांसा" - जैमिनी रुषि, अने ६."वेदांत" - वेद व्यासजी. आ रुषियोए वेदो नो स्वीकार कर्यो छे. तेथी तेने "आस्तिक दर्शन" कहेवाय छे.

तदुपरांत अन्य त्रण दर्शनो पण अस्तित्वमां आव्या छे - १ "चार्वाक दर्शन", २." बौद्ध दर्शन", ३."जैन दर्शऩ". आ त्रण दर्शनो वेद नो स्वीकार न करता होवाथी तेमने "अवैदिक" अथवा "नास्तिक" दर्शन कहेवाय छे. तेओ ईश्वर जेवुं कांई तत्त्व होवानो अस्वीकार करे छे.

आ विविध विचारधाराओमां मुख्य भेद शंकराचार्यजी अने श्रीवल्लभाचार्यजी ना दार्शनिक सिद्धांतो नो छे. शंकराचार्यजी कहे छे - ब्रह्म सत्य छे, परंतु आ द्रश्यमान जगत मिथ्या छे, एटले के ते मायाना कारणे थतो आपणो भ्रम मात्र छे, अवास्तविक छे अने 'जीव' पण स्वयं ब्रह्म ज छे. तेथी तेओ कहे छे - "अहं ब्रह्मास्मि".

श्रीवल्लभाचार्यजी आ वात थी सहमत् नथी. तेओ कहे छे - ब्रह्म सत्य छे तेम जगत पण सत्य ज छे कारणके ते ब्रह्मेज लीधेलु रुप-नाम-कर्मात्मक तेनुं बीजु स्वरुप छे, अर्थात् 'ब्रह्मात्मक' छे, तेथी ते मिथ्या के 'असत्' न होई सके. तेमज, असंख्य जीवो भगवान ना 'अंश' छे, भगवान 'अंशी' छे. ब्रह्म अने जीव वच्चे आ भेद छे. 'संसार' मिथ्या छे, कारण के ते आपणे मानी लिधेल 'हुं' अने 'मारु' नी गलत भ्रमणा ने लिधे उद्भवेल छे, वास्तविक नथी. ....क्रमशः..... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (३)

****

श्रीवल्लभाचार्यजीए पोतानी दार्शनिक विचारधारा "शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद" चार मुख्य 'भगवद् शास्त्रो -१.वेद, २.गीता, ३.ब्रह्मसूत्रो अने ४.भागवत ना प्रमाणो ना आधारे प्रस्तुत करी छे. आ चार प्रमाणो ना समुहने "प्रमाण चतुष्टय" कहेवाय छे. तेमणे आ चार प्रमाणोने 'शब्द प्रमाण' तरीके स्वीकार्या छे, कारणके ते बधाज भगवान नी वाणी छे, तेथी ते प्रमाण रुप गणाय. तेमां कहेला तथ्यो साचाज होय.

उपनिषद वेदनो अंत भाग छे. तेथी तेने "वेदांत" पण कहेवाय छे. बादरायण व्यासजी (वेद व्यासजी) ए समग्र उपनिषदोने 'सूत्र' रुपे आलेख्या छे. कुल ५५४ सूत्रो छे, जे "ब्रह्म सूत्रो" कहेवाय छे. तेमां बधाज वेदोनुं ग्यान समाविष्ट छे. आ सूत्रोमां ब्रह्मना स्वरुपने समजाववामां आव्यु छे. परंतु सुत्र

नी सांकेतिक भाषा सामान्य मनुष्य समजी सके नहीं. तेथी शंकराचार्यजी थी श्रीवल्लभाचार्यजी सुधीना बधा आचार्यो ए तेने समझाववा तेना पर 'भाष्य' (विशिष्ट प्रकारनी व्याख्या) नी रचना करी छे. श्रीवल्लभाचार्यजीना भाष्यने "अणुभाष्य" तरीके ओळखवामां आवे छे. ते तेमणे करेलुं वेदांतनुं अर्थघटन होवाथी तेने "वल्लभ वेदांत" पण कहेवाय छे.

श्रीवल्लभाचार्यजीना 'तत्त्वदर्शन' ने समजवा माटे 'अणुभाष्य' अति महत्त्वनो ग्रंथ छे. तेमां तेमणे 'ब्रह्म' तथा जीव अने जगत ना स्वरुपने समजाव्या छे. तदुपरांत श्री वल्लभाचार्यजीनो बीजो महत्त्वनो ग्रंथ छे - "तत्त्वार्थदीपनिबंध". बधाज शास्त्रोनुं दोहन करी तेमणे आ ग्रंथ त्रण प्रकरणो मां आलेख्यो छे. १. शास्त्रार्थ प्रकरण', जेनो आधार 'गीता' छे, २. सर्वनिर्णय प्रकरण, जे रामायण-महाभारत सहित अन्य सर्वे शास्त्रो पर आधारित छे, अने ३. भागवतार्थ प्रकरण, जेनो आधार 'भागवत' छे. आ ग्रंथमां श्रीमहाप्रभुजी ए ब्रह्म, जीव, जगत, संसार, अंतर्यामि, विद्या, अविद्या, माया, भक्ति, ईत्यादि अनेक विषयोना विस्तारथी खुलासा करेला छे. तेमनुं आध्यात्मिक चिंतन समजवा आ खुबज उपयोगी ग्रंथ छे.

ए सिवाय तेमणे भागवतजीने विस्तारथी समजाववा 'सुबोधिनी' नी रचना करी छे. 'षोडश ग्रंथों' तेमणे रचेला १६ लघु ग्रंथोनो समुह छे, जे तेमणे पोताना सेवकोने उद्देशीने तेमणी मुंझवणो दुर करवा लखेला छे. पुष्टिमार्ग पर चालवा ईच्छता अनुयायीओने माटे आ मार्गदर्शक ग्रंथो छे.

आम श्रीमहाप्रभुजीना सिद्धांतो, तेमनी दार्शनिक विचारधारा जाणवा माटे तेमना आ चार ग्रंथो - अणुभाष्य, तत्त्वार्थदीपनिबंध, षोडश ग्रंथो अने सुबोधिनीजी नो अभ्यास करवो जरुरी गणाय.
.....क्रमशः.... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (४)

****

तत्वार्थ दीप निबंध" श्रीमहाप्रभुजीना दार्शनिक तथा व्यवहारिक सिद्धांतो समझवा माटे मौलिक अने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ छे. पुष्टिमार्गनुं अनुसरण करी पोतानो उद्धार करवा ईच्छता सौ कोईए तेनो अभ्यास करवो जोईए. आ ग्रंथना मंगलाचरण मांज पोतानी 'शुद्धाद्वैत विचारधारा' नो तेमणे परिचय आपतां कह्यु छे - "नमो तस्मै भगवते कृष्णायाद्भुत कर्मणे, रुप नाम विभेदेन जगत क्रीडती यो यतः" अर्थात् 'अद्भूत लीलाओ करनार भगवान कृष्ण, जे पोते विविध रुप अने नाम धारण करी आ जगतमां क्रीडा करी रह्या छे, तेमने हुं नमन करुं छुं'. आम आ सृष्टि मां मूल तत्त्व 'भगवान श्री कृष्ण' छे, तेमणे ज आ विविध रुप अने नाम वाळु 'जगत' रुप धारण कर्यु छे (तेओ ज जगत रुप बन्या छे), तेनुं प्रयोजन पोतानी 'लीला' छे.

आ ग्रंथना प्रथम 'शास्त्रार्थ प्रकरण' मां तेमणे पोतानी विचारधाराना मूलमां स्वयं भगवानी वाणी होवानो खुलासो करतां, एक विवाद ना चार मुद्दाओ - १. मुख्य शास्त्र कयुं?, २.मुख्य देव कोण?, ३. मुख्य मंत्र कयो?, अने मनुष्यनुं मुख्य कर्तव्य शुं?, विषे भगवान श्रीजगन्नाथजी ए आपेलो श्लोक टांक्यो छे. तेनो अर्थ छे - "मुख्य शास्त्र 'गीता' छे, मुख्य देव 'श्रीकृष्ण' छे, मुख्य मंत्र तेमनुं नाम 'श्री कृष्ण शरणं मम' छे, अने 'श्रीकृष्ण नी सेवा' मनुष्यनुं मुख्य कर्तव्य छे. आम श्रीमहाप्रभुजीनी दार्शनिक विचारधारा गीता आदि शास्त्रो पर आधारित छे, अने तेमनी साधना प्रणाली नुं केंद्रबिंदु 'श्रीकृष्ण नी सेवा' अने 'अष्टाक्षर मंत्र ना रटण द्वारा तेमनी 'शरणागति' छे.

'गीता' स्वयं भगवान कृष्ण नी वाणी होई, वेद तुल्य छे तेथी श्रीमहाप्रभुजीए तेने 'मुख्य शास्त्र' गणी तेना आधारे पोताना विचारो अने तत्वदर्शन ना विभिन्न प्रश्नो ना खुलासा करेला छे. तेथी " निबंध " नुं प्रथम प्रकरण "गीतार्थ प्रकरण" पण कहेवाय छे. तेवीज रीते तेमणे करेला भागवतना अर्थनुं "भागवतार्थ प्रकरण" मां निरुपण करवामां आव्युं छे, तथा अन्य बीजा बधा शास्त्रनी आग्याओ नुं स्पष्टिकरण तेमणे "सर्वनिर्णय प्रकरण" मां कर्यु छे. ते रीते बधाज शास्त्रोनो निर्णय आ ग्रंथमां थी मळी रहेछे. माटे साचा अर्थमां पुष्टिमार्गिय अनुयायीओं माटे आ ग्रंथ खुबज उपयोगी छे, तेथी तेनुं अध्ययन अवश्य करवुं जोईए..........क्रमशः..... (डो. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (५)

****

श्रीमहाप्रभुजीना दार्शनिक सिद्धांतो समजवा माटे तेमना ग्रंथो - अणुभाष्य, निबंध तथा सुबोधिनीजी ईत्यादि नुं अध्ययन आवश्यक गणाय, परंतु पुष्टिमार्ग' नुं अनुसरण करवा ईच्छता सौ कोई माटे कमसेकम "षोडश ग्रंथो" नो अभ्यास करवो तो अनिवार्य छे. आने 'वल्लभ गीता' पण कहे छे, एटला माटे के जेम विषादमां सरी पडेला अर्जुन ने भगवाने महाभारतना युद्ध मां तेना कर्तव्यनो बोध गीता द्वारा आप्यो हतो, तेम पुष्टिना पंथे अग्रेसर थवा छतां पोताना अनुयायी वर्गने तेमना जीवन संग्राममां क्यारेक हतोत्साहित थई जता के भटकी जता, पुनः स्वमार्गमां स्थित थवा माटे निज कर्तव्यनो यथोचित बोध आपवा "वस्तुतः कृष्ण" एवा महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीए 'षोडश ग्रंथो' नी रचना करी छे.

जे चार थांभलाओ उपर श्रीमहाप्रभुजीए 'पुष्टिमार्ग' नी ईमारत उभी करी छे, ते छे - भक्ति, शरणागति, समर्पण अने सेवा. ए चारेय बाबतोने पुष्टि-जीवन जीववा माटेनी जडीबुट्टी कही सकाय. तेथी पुष्टिमार्ग' नुं अनुसरण करवा तद् विषयक समज केळववी ज जोईए. तदर्थ आपश्रीए षोडश ग्रंथो मां मुख्यत्वे आ चार विषयोने सारी रीते समजाव्या छे, कारण के ते चारेय बाबतो परस्पर एक सांकळनी माफक संकळायेल छे.

श्रीमहाप्रभुजीए प्रस्थापित - प्रवर्तित करेलो मार्ग "पुष्टि भक्तिमार्ग" छे. तेमणे बतावेली भक्ति भागवतमां निरुपित 'नवधा भक्ति' ना नव सोपान चढ्या पछीनुं दशमुं सोपान 'प्रेम लक्षणा भक्ति' नुं छे, अर्थात कही सकाय के पुष्टिमार्गमां 'भक्ति ज मुख्य छे.

'भक्तिनी व्याख्या करी छे - "भगवान ना महात्म्य ग्यान पूर्वक तेमनांमा सुदृढ सर्वतोधिक स्नेह", तेने भक्ति कहेवाय. आथी स्पष्ट थाय छे के भक्तिना बे अनिवार्य अंग छे - 'भगवाननुं महात्म्य ग्यान' अने तेमनामां 'उत्कृष्ट स्नेह'. जो आवी भक्ति होय तो तेना परिणामे - महात्म्य ग्यान थी भगवाननी 'शरणागति' सिद्ध थशे अने स्नेह ना कारणे आपणे आपणु सर्वस्व प्रभुने समर्पित करवा तत्पर थईशुं, अर्थात् "समर्पण' सिद्ध थशे. तेथी आपणे शरणागति तेमज समर्पण पुर्वक भक्तिनी अभिव्यक्ति 'सेवा' द्वारा करीशुं. ते माटे आ चारेय विषयोने समजवा जरुरी गणाय.

तदर्थ श्रीमहाप्रभुजीए, षोडश ग्रंथो मां - १. " भक्ति" ना स्वरुपने समजाव्यु छे -भक्तिवर्धिनी, यमुनाष्टक, चतुःश्लोकी, जलभेद मां; २. "शरणागति" - 'विवेकधैर्याश्रय, बालबोध, कृष्णाश्रय, पंचपद्यानि मां; ३. "समर्पण" - नवरत्न, सिद्धांत रहस्य, अंतःकरण प्रबोध, निरोधलक्षण मां अने ४. " सेवा" - सिद्धांतमुक्तावली', पुष्टिप्रवाहमर्यादा भेद, संन्यास निर्णय, सेवाफल मां.

तेथी आ ग्रंथो नुं अध्ययन अवश्य करवुं जोईए! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (६)

****

श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा प्रवर्तित "पुष्टि-भक्तिमार्ग" भगवत्-प्राप्ति नो सरलत्तम मार्ग छे. ते तेमणे बतावेली आपणा दैनिक जीवनमां आचरण करवानी एक 'साधना प्रणाली' छे, अर्थात् ते 'पुष्टि संप्रदाय' नो 'आचार' अथवा 'व्यवहार पक्ष' छे. परंतु तेनी पृष्टभूमि मां एक चोक्कस विचार अथवा 'सिद्धांत' रहेल छे, तेमनी 'दार्शनिक विचारधारा' रहेली छे. ते "साकार ब्रह्मवाद" ना नामथी ओळखाय छे. तेमना मतने "शुद्धाद्वैत वाद" पण कहेवाय छे. ते शंकराचार्यजी द्वारा प्रतिपादित "केवलाद्वैत वाद" थी भिन्न छे.

श्रीमहाप्रभुजीए पोतानी दार्शनिक विचारधारा ने "वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो-भागवत", ए चार भगवद्-शास्त्रो, जे " प्रमाण चतुष्टय" कहेवाय छे, तेना आधारे प्रस्तुत करी छे. ए शास्रो ना सारने तेमणे 'षोडश ग्रंथो' उपरांत 'सुबोधिनी', तत्त्वार्थदीपनिबंध, तथा 'अणुभाष्य', ए त्रण ग्रंथोमां करी छे. सुबोधिनीजी तेमणे करेली भागवकजी नी व्याख्या छे, जे प्रथम त्रण स्कंध, दशम स्कंध तथा एकादश स्कंध ना चार अध्याय पर ज उपलब्ध छे. तेमनो बीजो ग्रंथ 'अणुभाष्य' छे. ते 'वेदांत' एटले उपनिषदो पर व्यासजीए रचेला 'ब्रह्मसूत्रो' पर लखेलुं श्रीमहाप्रभजी नुं भाष्य छे, अर्थात् तेमणे करेलो वेदांतनो खुलासो छे. तेथी, अणुभाष्यने "वल्लभ वेदांत" पण कहेवाय छे.

श्रीवल्लभाचार्यजीनो चोथो अति महत्त्वपुर्ण ग्रंथ छे - "तत्त्वार्थ दीप निबंध", जेने मात्र " निबंध" पण कहे छे. तेमणे आ ग्रंथनी रचना त्रण प्रकरणोमां करी छे - १. शास्त्रार्थ प्रकरण, जेमां गीताना उपदेशनीे तेमणे छणावट करी छे. तेथी ते 'गीतार्थ प्रकरण' पण कहेवाय छे. २. सर्वनिर्णय प्रकरण, जेमां वेद, मिमांसा, रामायण, महाभारत, तथा आगमो ना आधारे अनेक महत्त्वपूर्ण खुलासा तेमणे कर्या छे. ३. भागवतार्थ प्रकरण. श्रीमहाप्रभुजीए भागवतना सात प्रकारे अर्थ कर्या छे - शास्त्रार्थ, स्कंधार्थ, प्रकरणार्थ, अध्यायार्थ, श्लोकार्थ, शब्दार्थ, अने अक्षरार्थ. एमांना प्रथम चार अर्थ तेमणे 'भागवतार्थ प्रकरण' मां समजाव्या छे ज्यारे बाकीना त्रण अर्थनो खुलासो तेमणे 'सुबोधिनी' मां कर्यो छे. आम आ त्रणेय ग्रंथो, विशेषतः "निबंध" श्रीमहाप्रभुजीना दार्शनिक सिद्धांंतो समजवा माटे खुब उपयोगी छे. तेमांं ब्रह्म, जीव, जगत, संसार, ईत्यादि बाबतोना विस्तारथी खुलासा करवामां आव्या छे. भागवत तो 'भक्ति' नो ज ग्रंथ छे, जे पुष्टिमार्ग नुं महत्त्वपूर्ण अंग छे.

माटे पुष्टिभक्तिमार्गे चाली भगवद् प्राप्ति नुं आपणुं लक्ष होय तो श्रीमहाप्रभुजीना आ सर्वे ग्रंथो नुं अध्ययन करवुं आवश्यक गणाय ! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (७)

****

प्रत्येक 'साधना प्रणाली' ना मूळमां कोईक दार्शनिक सिद्धांत रहेलो होय छे. "पुष्टि भक्तिमार्ग" पण श्रीवल्लभाचार्यजीए भगवद्-प्राप्ति ना लक्ष ने सिद्ध करवा प्रवर्तित करेली एक विशिष्ट साधना प्रणाली छे. तेनो आधार तेमणे वेदादि शास्त्रोना प्रमाणोनो स्वीकार करी तेमणे प्रतिपादित करेली दार्शनिक विचारधारा - "शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद" छे. तेनी [09/06 पूर्वक समजण तेमणे पोताना निबंध ग्रंथना

विशेषतः 'शास्त्रार्थ प्रकरण' मां आपी छे. तेनी रचनानो पायो 'भगवद् गीता' छे. भगवान श्रीकृष्णे अर्जुनने जे 'ब्रह्म विद्या' समजावी तेना खुलासा श्रीमहाप्रभुजीए आ ग्रंथ मां कर्या छे. तदर्थ तेने 'गीतार्थ प्रकरण' पण कहे छे.

पोताना तात्त्विक विचारो रजु करतां पहेलां आ ग्रंथनी शरुआतमां तेमणे केटलाक महत्त्वनी स्पष्टता करी छे. सर्व प्रथम मंगलाचरण मांज आपे पोतानी विचारधारा संक्षिप्तमां बतावी दीधी छे. तेमणे कह्युं छे - "अद्भुत कर्म करवावाळा भगवान कृष्ण, जेओ विविध रुप अने नाम धारण करी जगत मां क्रीडा करी रह्या छे तेमने हुं नमन करुं छुं". आ श्लोकमां ज तेमणे समजावी दीधुं के 'मुल तत्त्व' भगवान श्रीकृष्ण छे. तेओज जगत रुप बन्या छे अने तेमां अनेक रुप अने नाम धारण करी अनेक प्रकारनी लीला करी रह्या छे.

वधुमां तेमणे भगवान जगन्नाथजीए आपेला चार प्रश्नोना खुलासा - १. गीता मुख्य शास्त्र छे, २. भगवान कृष्ण मुख्य देव छे, ३. तेमना नामनो जप मुख्य मंत्र छे अने तेमनी सेवा मुख्य कर्तव्य छे, तेने आ ग्रंथनो आधार बनाव्यो छे. तेमणे समजाव्यु छे के वेदमां जेमने 'ब्रह्म' कह्या छे, गीता वगेरे स्मृति शास्त्रोमां 'परमात्मा' कह्या छे, भागवत आदि पुराणोमां 'भगवान' तरीके संबोधन करवामां आव्यु छे, ते बधा " परब्रह्म"ना ज नाम छे. भागवत कहे छे "'कृष्णस्तु भगवान स्वयम्". तेथी समजी शकायके ते 'परम तत्त्व' श्रीकृष्ण छे.

जेने महत्त्वनी स्पष्टता कही सकाय ते बाबत तेमणे, पोतानी विचारधारा मनघडंत नथी, परंतु भगवद्-शास्त्रोना पमाणो परआधारित छे, तेने माटे कह्युं छे के तेमणे "वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो-भागवत" ने "प्रमाण-चतुष्टय" रुपे स्वीकार्या छे.

केटलाक 'ब्रह्म' ने मात्र 'क्रिया-शक्ति' युक्त गणी तेमने पामवा 'यग्य-यागादि' कर्म कांडना विधान करे छे, अथवा बीजा ब्रह्मने ग्यान-शक्ति' युक्त मानी तेमने ग्याननो विषय मानेछे, तेथी तेने 'ग्यान- द्वाराज मेळवी शकाय तेम समजे छे. श्रीमहाप्रभुजीए स्पष्ट खुलासो कर्यो छे के उपनिषद कहे छे तेम ब्रह्म 'क्रिया अने ग्यान' एम उभय शक्रि युक्त छे, जे स्वरुपनुं वर्णन भागवत मां 'भगवानश्रीकृष्ण' रुपे करवामां आव्युं छे, तेज "परम तत्त्व" 'परब्रह्म परमात्मा' छे. ......क्रमशः.... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (८)

****

श्रीमहाप्रभुजीए निबंध ग्रंथना 'शास्त्रार्थ प्रकरण' मां बीजा पण महत्त्वना खुलासा कर्या छे. तेओ कहे छे के आ ग्रंथनी रचना तेमणे विविध भगवद् शास्त्रोनो वारंवार विचार करीने करी छे. तदर्थ तेमां प्रस्तुत थयेल विधानोनी गंभीरता समजी शकाय छे. तेओ वधु स्पष्टता करे छे के एवा सात्विक भगवद् भक्तो, जेमना कर्मोना बधा फल भोगवाई चुक्या होय, जेथी जेमनो छेल्लो जन्म होय, तेवा मुक्तिना अधिकारी माटे तेमणे आ ग्रंथ रच्यो छे. ते तेनी फलदायिता सूचवे छे.

आपणे जाणिये छीए के 'परम तत्त्व' ने 'श्रुति' एटले वेदादि मां "ब्रह्म" कह्या छे, स्मृति - गीता आदि शास्त्रोमां "परमात्मा" शब्द वपरायो छे, अने भागवत आदि मां तेनेज "भगवान" तरीके संबोधवामां आव्या छे. श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के वस्तुतः ए बधा ज नामो 'ब्रह्म परक' ज छे, तेम छतां जेते संदर्भ मां जुदा जुदा नाम वपराय छे. जीवात्मा ना संदर्भमां तेने 'परमात्मा' कहेवाय, ज्यारे कोई भक्त तेमनुं भजन करे त्यारे ते परम तत्त्वने 'भगवान' नामथी संबोधन करवामां आवे.

तेमणे स्वीकारेल प्रमाणो 'वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो-भागवत', जे "प्रमाण चतुष्टय" कहेवाय छे, तेना क्रमने समझावतां श्रीमहाप्रभुजी कहे के कोई शास्त्रमां ज्यारे बे विरोधि कथन होय त्यारे तेमां उद्भवतां संदेहनुं निवारण ते पछीना शास्त्रमां थई शके छे. अर्थात् वेदना विधान नो खुलासो गीतामां मळी शके, गीता नो ब्रह्मसूत्रोमा. भागवत तो सर्वसंदेह वारक होई तेनाथीं बधी बाबतो ना खुलासा थई जायछे. वधुमां तेओ कहे छेके आ प्रमाणोनी विरुद्ध होय तेवा वचनोने प्रमाण रुप स्वीकारी शकाय नही. आ प्रमाणोना आधारे ज आपश्रीए कृष्णदेवराय नी शास्त्र चर्चामां शांकरमतवादीओ ने निरस्त कर्या हतां.

प्रमाण विशे आपश्रीए महत्वनो खुलासो ए पण कर्यो छे के 'परम तत्त्व' ब्रह्मने वेदना 'पूर्वकांड' मां 'क्रियाशक्ति' रुप मान्यु छे, ज्यारे 'उत्तरकांड'मां 'ग्यानशक्ति' रुप बताव्यु छे, परंतु भागवतजीमां 'क्रिया-ग्यान' उभय युक्त जे पुर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण नुं वर्णन करवामां आव्यु छे, तेज 'तात्विक द्ष्टि' थी 'परब्रह्म' छे. त्यां कह्यु छे - "कृष्णस्तु भगवान स्वयम्". अर्थात् ब्रह्म = परमात्मा = भगवान = श्रीकृष्ण . ...क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (९)

****

आपणे आ पूर्वे जोयुं के श्रीमहाप्रभुजीए गीताजीने मुख्य शास्त्र तरीके स्वीकारी तेना आधारे तेमना प्रमुख ग्रंथ 'तत्वार्थदीपनिबंध' ना प्रथम शास्त्रार्थ प्रकरण मां भगवाने अर्जुनने आपेला 'ब्रह्मविद्या' ना उपदेशने आलेख्यो छे. प्रमाण आदिना पूर्व खुलासा करी तेमणे आ ग्रंथमां पोताना 'शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद' नी दार्शनिक विचारधारा ने प्रतिपादित करी, तद् विषयक अनेक महत्त्वपूर्ण बाबतोनी सैद्धांतिक स्पष्टता करी छे.

वास्तवमां श्रीमहाप्रभुजी नी विचारधारा 'अखंड ब्रह्मवाद' नी छे, जेने श्रीगुसांईजीए 'साकार ब्रह्मवाद' नाम आप्यु छे. तेमणे स्वयं "शुद्धाद्वैत" नाम आपेल नथी, जेनी चर्चा आगळ करवामां आवशे.

आ ग्रंथमां तेमणे आधारभूत बाबतोनी स्पष्टता करी, शरुआत मां जड-जीवात्मक जगतनुं तथा भगवाननी शक्ति रुपा मायानुं प्रतिपादन कर्युं छे. त्यार पछी चिदंश' रुप जीव तेमज सद्श रुप जड पदार्थना स्वरुपने समजाव्यु छे. जीवात्मानी साथे प्राणी मात्रमां भगवाननो आनंदांश रुपे 'अंतर्यामी' निहित छे, तेना स्वरुपने पण तदुपरांत समजाव्युं छे. भगवानमांथी आ त्रिविध स्वरुपो - जड, जीव अने अंतर्यामी ना पाकट्यनो प्रकार बतावी, आपणने बंधनमां नाखनार, सुख-दुःख नो अनुभव करावनार 'संसार' नुं स्वरुप शुं छे, तथा तेनी निवृत्ति कई रीते थई शके, तेमां कया परिबळो काम करतां होय छे, वगेरे खुलासा श्री महाप्रभुजीए करेला छे.

आ समग्र गतिविधीयो ना पायामां रहेलुं 'ब्रह्म तत्त्व' समजवुं जरुरी छे. ज्यां सुधी आपणने ते 'परम तत्त्व' ना वास्तविक स्वरुपनी ओळख न थाय त्यां सुधी तेना घटक रुपे आ जड-जीवात्मक जगतना स्वरुपने यथार्थ रुपे जाणी न सकाय. तेथी श्रीमहाप्रभुजी ए आ ग्रंथमां विस्तारपूर्वक ब्रह्म स्वरुपने समजाव्यु छे.

आ सर्वे तात्विक चिंतननी साथे आपणे जे जीवन जीवी रह्या छीए, तेनुं ध्येय शुं छे, आपणुं लक्ष शुं होवुं जोईए, ते लक्षनी प्राप्ति माटे आपणे कया साधन करवा जोईए वगेरे बाबतो पण तेटली ज महत्त्वपूर्ण छे. ते सर्वे बाबतोनुं दार्शनिक चिंतन श्रीमहाप्रभुजीए तेमना आ विशिष्ट ग्रंथ द्वारा विस्तारथी समजाव छे.

आ उपक्रम द्वारा संक्षिप्तमां ते "अखंड ब्रह्मवाद" नी समग्र विचारधाराने समजवा प्रयास करीशुं.
.....क्रमशः......   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (१०)

****

आपणे अगाउ जोयु के ब्रह्म, परमात्मा, भगवान सृष्टिमां जेनुं अस्तित्व. छे ते एकज 'परम तत्त्व' ना नाम छे. तेने माटे श्रुति वचन छे - "एकमेवाद्वितियम्", अर्थात् जे पण 'तत्त्व' छे ते 'एक मात्र' ज छे, बीजु कांईज नथी. एटले 'ब्रह्म' सिवाय कोई REALITY - पदार्थ ज नथी. तेने उपनिषद मां "ब्रह्म" शब्द थी ओळखाव्यु छे. श्रीमहाप्रभुजी आ हकिकत ने समझाववा निबंधना 'सर्व निर्णय' प्रकरण मां खुलासो करे छे के "प्रमेय हरिरेव एकः". अर्थात् 'प्रमेय' (जे जाणवा लायक छे) ते एक मात्र 'श्रीहरि' ज छे. मतलब के भगवान अथवा ब्रह्म सिवाय अन्य कशुंज अस्तित्व धरावतुं नथी. श्रीमहाप्रभुजीना "ब्रह्मवाद" ना सिद्धांत नो आ पायो छे.

आ तथ्यना आधारे ज शंकराचार्यजीए पोताना 'केवलाद्वैत' मतना सिद्धांतनुं प्रतिपादन कर्युं छे. तेथी ज तेओ जगतना वास्तविक अस्तित्व नो स्वीकार करता नथी. तेम छतां श्रीमहाप्रभुजीना मतथी तेमना विचार भेदनी चर्चा आगळ करीशुं.

उपनिषद समजावे छे के पहेला (ज्यारे जगत अस्तित्व मां नहतुं आव्युं त्यारे) ब्रह्म मात्र एकला ज हता. तेमने अनेक थवानी इच्छा थई. (कारणके एकलाथी आनंद अनुभवाय नहीं). तेमने विचार्युं 'हुं अनेक धाउं', "एकोहम बहु स्याम प्रजायेय". आम इच्छा मात्रथी ब्रह्मे जगतमां देखाता विविध रुप अने नाम धारण करी लीधा छे.

ब्रह्म ना स्वरुपने ओळखावतां कह्युं छे- ते "सच्चिदानंद" छे अर्थात् तेमां त्रण तत्वो 'सत्' (existence), 'चित्त' (Consciousnesses), अने 'आनंद' (bliss) रहेला छे. अथवा एम पण कही शकाय के ब्रह्म सत्, चित् अने आनंद ए त्रणेय रुप धरावे छे. तेनुं वर्णन करतां श्रुति कहे छे - ते 'व्यापक', देश-काल अपरिच्छन्न, एटले स्थळ अने समयनी मर्यादा मां बंधायेल नथी, ते 'स्वतंत्र' छे, कोईना ताबामां नथी, 'सर्वग्य' छे, एटले प्रकट अने अप्रकट बधाज नाम-रुप- कर्मने ते जाणे छे, ते 'सर्व शक्तिमान' छे, अर्थात् तेमां 'कर्तुम्-अकर्तुम्-अन्यथा कर्तुम्' सामर्थ्य रहेलुं छे. वळी ते 'अविनाशी' अने 'अव्यय' छे, एटले तेनो क्यारेय नाश थतो नथी के ते वपरातो (खर्चातो) नथी. ते प्रकृति ना सत्व-रज-तम गुण थी पर छे. आवा अनेकानेक धर्मो ब्रह्म मां रहला छे, जेनु वर्णन करतां स्वयं वेदनी रुचाओ ने 'नेति नेति', अर्थात् एटलुंज नहीं, आथी विशेष छे एम कहेलुं पडे छे.

.... क्रमशः......   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत". (११)

****

.... क्रमशः...... तदुपरांत ए 'ब्रह्म' तत्त्व प्रकृति ना सत्त्व, रजः, अने तमः गुणोथी रहित छे, अने ते अर्थ मां ते 'निर्गुण' कहेवाय छे. वास्तवमां प्रकृमां रहेला एत्रणेय गुणो 'सच्चिदानंद' ब्रह्मना सत्, चित्, अने आनंद तत्वो मां थी ज अनुक्रमे पकट थयेली छे. ब्रह्म मां 'सजातिय', विजातिय, अथवा

'स्वगत' एवा भेद न थी. बधा गायो ने 'सजातिय' कहेवाय, गाय- भेंस- घोडो एम विजातिय कहेवाय, अने वृक्षना विभागो - थड, डाळी, पांदळा इत्यादि 'स्वगत' भेद कहेवाय, परंतुं आवा भेद ब्रह्म आवा भेद थी पर छे.

आ प्रकारना भेदो तथा धर्मो थी रहित होवा छतां ब्रह्म मां हजारो गुणो स्वाभाविक सद काल थी रहेला छे, जेवा के - सत्य, शौच (पवित्रा), दया वगेरे. तदुपरांत तेमां अलौकिक षडगुणो - ऐश्वर्य, वीर्य, यशः, श्री, ग्यान अने वैराग्य रहेला छे. ते अर्थ मां ब्रह्म ने 'सगुण' पण होवानुं कहेवाय छे.

उपरोक्त रीते ब्रह्म 'निर्गुण' तेमज 'सगुण' बन्ने छे. श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के ब्रह्म एवुं तत्त्व छे जेना सर्वभवन सामर्थ्य ना कारणे एक बीजाथी विरुद्ध धर्मो एक साथे रही शके छे. तेथी तेओ ब्रह्म ने 'विरुद्ध धर्माश्रयी' कहे छे.

जो के शंकराचार्यजी वेदनी श्रुतिओने निर्गुण / सगुण विभाजित करी कहे छे के निर्गुण श्रुतिओ जेनु निरुपण करे छे, ते "परब्रह्म" छे. ते मुख्य छे, जे ' निर्गुण निराकार' छे. जे श्रुतिओ ब्रह्म ने 'सगुण-साकार' बतावे छे, ते "अपरब्रह्म" छे, छे. ते माया -विशिष्ट गौण स्वरुप उपासना माटे समजाववामां आव्युं छे. श्रीमहाप्रभुजीने आ अर्थघटन मान्य नथी, कारण के तेओ संपुर्ण वेदनोे, तेना 'पूर्वकांड' अने 'ग्यानकांड' सहित प्रमाण रुपे स्वीकार करे छे.

तदुपरांत श्रीमहाप्रभुजी शास्त्रार्थ प्रकरण मां खुलासो करे छे के ब्रह्म सृष्टि मां दृश्यमान नाम-रुप-कर्म तामस जे पण पदार्थो छे तेनो आधार छे, ते प्रत्येक बस्तु ब्रह्म ने वश छे. 'माया' पण ब्रह्म ने आधिन छे, स्वतंत्र नथी. जगतना बघाज पदार्थोधथी ब्रह्म 'विलक्षण' छे. ते पोते आनंदाकार होई 'अक्षरब्रह्म' थी पण उत्तम छे. माटे गीतामां भगवान कहेछे "अक्षरादपि चोत्तम". .... क्रमशः.......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (१२)

****

"ब्रह्मवाद" श्रीमद् वल्लभाचार्यजीनी मूलभूत 'दार्शनिक विचारधारा' छे. परमात्मा वस्तुतः"एकमेवाद्वितियम्" तत्त्व छे तेम श्रुति कहे छे. तेनेज 'ब्रह्म' शब्द नी संग्या आपवा मां आवी छे, कारण के ते सर्व-व्याप्त तेमज देश-काल-द्रव्य अपरिच्छिन्न छे. उपनिषद तेने "सच्चिदानंद" कही ओळखावे छे, कारणके तेमां 'सत् (Existence), 'चित्' (Consciousnesse), अने 'आनंद' (Bliss) ए त्रण तत्त्वो समाहित छे. तेनी 'सत्ता' अने 'चेतना' तेमज 'आनंद' अपरिमित छे. तेमां कोई न्युनता के सीमा नथी.

श्रुति कहे छे -"एकोहम बहुस्याम प्रजायेय", 'हुं अनेक थाऊं' तेम ब्रह्म ने अनेक थवानी इच्छा थतां ते पोताना 'पुरुषोत्तम' स्वरुपना आधार स्थानिय चरण स्थानने अक्षर, काल, कर्म, स्वभाव, ए चार रुपो मां प्रकट करे छे, जेमां आनंद तत्त्व गणितानंद होय तेम भासे छे. तेने "अक्षरब्रह्म" कहे छे, जे सृष्टि नुं उपादान कारण छे. प्रकृति अने पुरुष 'अक्षर' नाज रुपांतर छे. ए रीते, अनेक रुप अने नाम युक्त 'कार्य'रुप सृष्टि नुं कारण 'अक्षरब्रह्म' अर्थात् तेना रुपांतरित स्वरुपो - काल, कर्म, स्वभाव, प्रकृति अने पुरुष छे.

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के देश, काल अने द्रव्य ब्रह्म नी सत्ताना त्रण पहेलु छे, जे तेनाथी स्वतंत्र नथी. 'द्रव्य' (matter) ब्रह्म थी भिन्न नथी, परंतु ब्रह्म नी 'सत्ता' नुं अन्ततम रुप छे. 'काल'

(time) पण ब्रह्मथी भिन्न नथी, परंतु तेना 'क्रियाशील'होवानी 'चेष्टा' छे. 'देश' (space) ने श्रीमहाप्रभुजी 'द्रव्य' नी अंतर्गत गणे छे. देश-काल-द्रव्य ब्रह्म ना 'सत्ता' ना अंश -'सदंश' छे. तेवीज रीते 'कर्म' (kinetic energy) अने 'स्वभाव' (potential energy) पण ब्रह्मनी ज अदृश्य सत्ता छे. आ 'कर्म' अने 'स्वभाव' ना कारणे 'काल'मां द्रव्य गतिशील अथवा स्थितिशील होय छे.

ब्रह्मे पोताना 'चिदंश' अने 'आनंदांश' ने तिरोहित करी मात्र 'सदंश' ने प्रकट राखी सृष्टि ना सर्व 'जड पदार्थ' रुप धारण कर्या छे, तथा पोताना 'आनंदांश' ने छुपावी, 'सदंश' तथा 'चिदंश' ना आविर्भाव साथे समग्र जीव सृष्टि बन्या छे. तेमज पोताना त्रणेय तत्वोना अंश रुपे असंख्य 'अतर्यामि' तरीके प्रत्येक जीवात्मा साथे स्थित छे.

आम 'काल-कर्म-स्वभाव-प्रकृति-पुरुष' नुं तंत्र 'सच्चिदानंद' ब्रह्म नी चेतना द्वारा संचालित छे. उपनिषद कहे छे - "बधा जड-चेतन रुपो ते आनंद मांथी प्रकट थया छे, आनंद मां स्थित रहे छे अने आनंद मां लीन थाय छे. ते आनंद ज ब्रह्म छे।

तेथी ज उपनिषद कहे छे -"सर्वं खलु इदं ब्रह्म". अर्थात् आ दृश्यमान 'जगत', ब्रह्म नुं ज बीजु रुप छे, 'ब्रह्मात्मक' छे. जड -चेतन -अतर्यामि ना असंख्य रुपो होवा छतां ते विभक्त नथी, समग्र पणे सुगठित (homogeneous) छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजीनी दार्शनिक विचारधारा ने "अखंड ब्रह्मवाद" कहेवाय छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (१३)

****

आपणे जोयुं तेम 'सच्चिदानंद' ब्रह्मे अनेक थवानी इच्छा थतां पोतानामां अविभक्त पणे रहेल सत्-चित्-आनंद तत्वोने विभक्त करी अनंत रुप अने नाम धारण करी ते जड-जीवात्मक जगत रुप बन्या. आम जगत मात्र ब्रह्म नुं रुपांतरित रुप मात्र छे, ब्रह्म नुंज 'आधिभौतिक' स्वरुप छे, ब्रह्म थी अभिन्न छे. जगत रुप थवानुं निमित्त स्वयं ब्रह्मनी पोतानी ईच्छा ज छे, ते माटे अन्य कांईज कारण भूत नथी. तेथी ज श्रीवल्लभाचार्यजी ना दार्शनिक सिद्धांत ने "शुद्धाद्वैत" कहेवाय छे -अर्थात् ब्रह्म अने जगत वच्चे 'शुद्ध अद्वैत' छे, तादात्म्य संबंध छे.

तेथी श्रीमहाप्रभुजी निबंध ना शास्त्रार्थ प्रकरण मां खुलासो करे छे के 'प्रपंच' एटले के आ जगत 'भगवत् कार्य' छे. जेवी रीते माटीमांथी घडो बने एटले घडाने माटीनु 'कार्य' कहेवाय. जेमांथी ते उत्पन्न थाय ते माटी ने घडानुं 'कारण' कहेवाय. ए रीते 'कारण' अने 'कार्य' एकबीजा थी हमेंशा जोडायेल होय छे. तेने "सत्कार्य वाद" नो सिद्धांत कहे छे. अहीं माटी मूल वस्तु छे, जेमांथी घडो बने छे तेथी तेने 'उपादान कारण' अथवा 'समवाय कारण' कहेवाय छे. तेवीज रीते धडो बनाववा माटे कुंभार तेमज तेना ओजार नी पण आवश्यकता रहे. तेने 'निमित्त कारण' कहेवाय. ब्रह्म अने तेमांथी उत्पन्न थतां जगतनी बाबतमां 'कारण' रुप ब्रह्म ज्यारे 'कार्य' रुपे जगतमां रुपांतरित थाय त्यारे, 'उपादान' तेमज 'निमित्त', बन्ने कारण ब्रह्म स्वयं ज छे. माटे ब्रह्म ने जगतनुं "अभिन्न निमित्तोपादान कारण" कहे छे.

आम छतां अलग अलग विचारधाराओ जगतनी उत्पत्ति ना भिन्न भिन्न कारण के हेतु बतावे छे. प्रत्येक 'दर्शन' जुदो जुदो मत धरावे छे. शंकराचार्यजी जगतने 'मायिक' कहे छे, अर्थात् ते माया द्वारा निर्मित छे. तेथी तेने मिथ्या, अवास्तविक बतावे छे. 'सांख्य दर्शन' मुजब जगतनुं निर्माण 'प्रकृति' अने 'पुरुष' एवा बे मूलभूत तत्वो मां थी थयेल छे. 'न्याय' तेमज 'वैशेषिक' दर्शन अनुसार आ जगत

परमाणुओनुं बनेलुं छे, ज्यारे 'पूर्व मीमांसा' दर्शन माने छे के जगत जीवोना कर्म फलने भोगववा नी एक व्यवस्था छे. बौद्ध दर्शन तो जगतना अस्तित्व नोज अस्वीकार करे छे. आ प्रकारनी अनेक मान्यता ओनो उपसंहार करतां श्रीमहाप्रभुजी कहे छे के आमांनु एकेय कारण पूर्णतया जगतना साचा स्वरुपनुं निरुपण करतुं नथी. आनो खुलासो तेमणे पोताना 'सिद्धातमुक्तावली' ग्रंथ मां पण स्पष्टतया करेल छे.

.... क्रमशः....... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (१४)

****

श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के वेद-वाणी मात्र 'ब्रह्म' नुंज वर्णन करे छे, कारण के ते 'शब्द-ब्रह्म' छे. आनो सीधो अर्थ ए थाय के जेटली पण विचारधाराओ छे ते सर्वे मात्र ने मात्र 'ब्रह्म' नुं ज निरुपण करे छे, कारण के ब्रह्म सिवाय अन्य कशानुं अस्तित्व ज नथी. श्रुति कहे छे "एकमेवाद्वितियम्". कोई ब्रह्म ने 'माया' कहे, 'मेटर' कहे, 'प्रकृति-पुरुष' बतावे, के कोई 'परमाणु' नी संग्या आपे, ते बधाज वास्तवमां 'ब्रह्म' विशेज कहे छे, परंतु ते संपुर्ण सत्य नथी. ते सौ ब्रह्म ना कोई एक पासाने बतावी रह्या छे, जेवी रीते कोई अंध व्यक्ति संपुर्ण हाथी ने न ओळखतां, तेना पग, सुंढ, कान ईत्यादि ना अनुभव ना आधारे तेने थांभला जेवो, दोरडा के सुंपडा जेवो बतावे. तेमां कोई ने असत्य न कहेवाय, छतां संपुर्ण सत्य पण नथी.

तेथी श्रीमहाप्रभुजी पोताना निबंध ग्रंथना शास्त्रार्थ प्रकरण मां एक खुबज महत्त्व नो खुलासो करतां कहे छे - "सर्व वादानवसरम् नानावादानुरोधित". अर्थात्, 'ब्रह्म' एक एवुं विलक्षण तत्त्व छे जे बधाज वादोने अनुसरे छे, परंतु ते कोई परिभाषा मां केद थई शकतुं नथी. आपणे जाणिये छीए के वेद मां ब्रह्म नुं अनेकविध वर्णन करवामां आव्युं छे. वेदनुं निरुपण करवामां वेदनी रुचाओ थाकती नथी छतां अंतमां "नेति नेति" कहे छे, अर्थात्, ब्रह्म मात्र आटलुंज के आवुं ज ऩथी, तेथी घणुं विशेष छे. कहेवानुं तात्पर्य ए के ब्रह्म ने संपुर्णपणे परिभाषित करवुं संभव नथी.

आ हकिकत ने कारणे ज 'रुगवेद' कहे छे - "एकम् सत् विप्राः बहुधा वदंति". अनेक नामोथी ते 'परम तत्त्व' ने संबोधवामां आवे छे. परंतु प्रत्ये धर्म अथवा दार्शनिक विचारधारा ते 'परम तत्त्व' ने पोतानी समजण अनुसार ओळखवानो के के ओळखाववा नो प्रयास करे छे.

आपणे जाणिये छीए के 'विष्णु सहस्त्र नाम' के 'पुरुषोत्तम सहस्त्र नाम'मां परब्रह्म परमात्मा ना हजारो नामोनुं वर्णन तेमना रुप, गुण, क्रियाना अनुलक्षीने करवामां आव्यु छे. कहेवाय छे के कुरान मां पण अल्लाहना अनेक नाम बताववामां आव्या छे.

तेथी श्रीवल्लभाचार्यजी नुं उपरोक्त कथन "सर्व वादानवसरम् नानावादानुरोधित" ने 'Philosophy of Philosophies' कही शकाय ! आवुं bold statement भाग्येज कोई महानुभावे कर्यु हशे !

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (१५)

****

श्रीवल्लभाचार्यजीए निबंध ग्रंथना शास्त्रार्थ प्रकरण मां 'ब्रह्म' नी विलक्षणताने ('सर्व वादानवसरम् नानावादानुरोधित' कारिका द्वारा) उजागर करी तेना स्वरुपने समजावतां कहे छे के छांदोग्य उपनिषद कहे छे तेम - "एतदात्म्यम् इदम् सर्वं, तत्सत्यम् स आत्मा तत्वमसि", ब्रह्म 'सर्वरुप छे. तेम छतां पोतानी सर्वरुपताने खंडित करी, एटले के ते जड अने जीवना विभाजन द्वारा वस्तुतः तो 'आ जे कांई छे ते बधु ब्रह्म ज छे' तेम समजावे छे. अर्थात् 'परम तत्त्व' ने परिभाषित करवा माटे जेटला पण प्रयासो थया छे, तेनुं समाधान आ श्रुति वाक्य थी थई जाय छे. जोके "तत्वमसि" एटला विभागने ज 'महावाक्य' गणी शंकराचार्यजी जीव नुं ब्रह्म रुप होवानुं प्रतिपादन करे छे, परंतु वास्तवमां अही. जगत अने जीव बन्नेने 'ब्रह्मात्मक' बताववामां आव्या छे. श्रीमहाप्रभुजीना मतानुसार जीव ब्रह्म रुप नहीं ब्रह्म नो अंश होई 'ब्रह्मात्मक' छे.

ब्रह्म ना स्वरुपने ओळखावतां श्रीमहाप्रभुजी कहे छे के ते 'सच्चिदानंद' रुप छे, अर्थात् तेमां 'सत्', 'चित्' अने 'आनंद' ए त्रणेय तत्त्वो समाहित छे. ते व्यापक तेमज अव्यय छे, एटले के तेनो क्षय थतो नथी. ते बधी जातनी शक्तिओ थी परिपूर्ण छे, स्वतंत्र तेमज सर्वग्य होवा उपरांत ते सत्व-रज-तम एवा प्रकृतिका गुणो थी वर्जित छे. ते अर्थ मां तेने 'निर्गुण' कहे छे.

तेनो क्यारेय उच्छेद थतो नथी, तेथी तेने 'अविनाशी' कहे छे. ते 'ग्यानशक्ति' अने 'क्रियाशक्ति' युक्त होवाथी ते बधाने वशमां ऱाखनार ईश्वर पण छे. प्राकृत गुणो न होवा छतां तेना 'सगुण' रुपमां ऐश्वर्यादि 'षड्गुणो (धर्मो) प्रकट होय छे. तेनामां सजातीय, विजातिय तेमज 'स्वगत' भेद नथी. ते सर्व नो आधार रुप छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (१६)

****

श्रीमहाप्रभुजीए 'परम तत्त्व' ब्रह्म ना स्वरुप नुं निरुपण निबंध ना शास्त्रार्थ प्रकरणमां कर्यो पछी एक महत्वपूर्ण स्पष्टता तेना सर्वनिर्णय प्रकरणमां करी छे. श्रुति वचन "एकमेवाद्वितियम्" ना प्रतिसाद रुप तेओ कहे छे - "प्रमेयं हरिरेव एकः". जाणवा लायक तत्त्वने 'प्रमेय' कहे छे. अर्थात् आ सृष्टि मां जो कशुं जाणवा योग्य होय तो ते मात्र 'श्रीहरि' ज छे. स्वाभाविक छे के जो 'ब्रह्म' सिवाय अन्य कांई अस्तित्व ज न धरावतुं होय तो अन्य 'प्रमेय' क्यांथी होय ! बीजु कयु तत्त्व जाणवा जेवुं होय ?

परंतु आपणी मुश्केली ए छे के आपणने समग्र सृष्टि मां असंख्य पदार्थो - विविध रुप, नाम अने क्रिया करतां देखाय छे, 'श्रीहरि' क्यांय नजर नथी आवतां ! आ वातनो खुलासो करतां श्रीमहाप्रभुजी कहे छे - "सगुणो निर्गुणः च स, गुणाः कार्य तथा धर्मः क्रियोत्पत्त्यादयः च सः", अर्थात् ते श्रीहरि (ब्रह्म) पोते अनंत दिव्य गुणो वाळा 'सगुण' तथा जड अथवा दुःखादि गुणो थी रहित 'निर्गुण' रुप धारण कर्यु छे. बधा नाम रुप अने कर्म रुप ते पोतेज बन्या छे. उत्पत्ति, स्थिति अने लय पण तेमांथी ज थाय छे.

परंतु आ बाबत ने समजवी कई रीते ? तेथी श्रीमहाप्रभुजी वधु खुलासो करतां कहे छे - 'आपणी बुद्धि समजी शके ते माटे ब्रह्म नुं त्रण प्रकारे वर्णन करवामां आव्युं छे - १ तेनुं मूळ स्वरुप, जे सगुण साकार श्रीकृष्ण नुं स्वरुप छे. २. तेमनुं 'कारण रुप स्वरुप' (कारण कोटी) , अर्थात् तेमनामां थी प्रकट थयेला मूल तत्त्वो, जेमांथी आ समग्र सृष्टि मां अनंत रुप, नाम अने कर्म 'कार्य रुपे' प्रकट थया छे, ते जगत (कार्य कोटी).

आम जो आ त्रण कोटी ना जुदा जुदा स्वरुपने स्पष्ट रुपे समजीए तो ब्रह्म नी समग्रताने जाणी सकाय. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत"(१७)

****

...... क्रमशः..... ब्रह्म नी एकरुपता मां विविधता समजाववा ना तेनी त्रण कोटी (categories) नुं वर्णन श्रीमहाप्रभुजी 'सर्वनिर्णय निबंध' मां करे छे. ब्रह्म नुं मूल स्वरुप स्वरुप सगुण-साकार

भगवान श्रीकृष्ण / पुरुषोत्तम छे. ते तेमनुं 'आधिदैविक स्वरुप छे. (अगाउ ब्रह्म - परमात्मा - भगवान विशे खुलासो करेलो छे). तेमां ब्रह्म नी क्रिया-शक्ति तेमज ग्यान-शक्ति बन्ने रहेली छे.

ब्रह्मे ज्यारे अनेक थवानी ईच्छा करी त्यारे आनंदांश नो तिरोभाव करीने पोताना चरण स्थान मां थी 'कारण रुप' आध्यात्मिक स्वरुप "अक्षरब्रह्म" ने उत्पन्न कर्यु. 'आनंदांश नो तिरोभाव' कहेवानुं तात्पर्य के "हवे मारे सृष्टि रुपे प्रकट थवुं छे" तेवी ईच्छा ने कारणे पोतानी भीतर रहेल सत्व के सत्ताना प्रबल थई जवाथी आनंदांश तिरोहित जेवो थई जाय छे. वास्तवमां 'अक्षरब्रह्म' 'सच्चिदानंद' ज छे.

अक्षरब्रह्म मांथी ब्रह्म नुं 'कारण कोटि' रुप २८ तत्वो प्रकट थया छे. ते छे १.पुरुष (ब्रह्म ना चित् तत्त्व मांथी), २.प्रकृति (ब्रह्म ना सत् तत्त्व मांथी), ३. महत् ('काल' ना कारणे पुरुष अने प्रकृति ना संयोजनथी), अने ते पछी तेमांथी उद्‌भवेला - ४. अहंकार, ५. थी ९ . तन्मात्राओ - शब्ब, स्पर्श, रुप, रस, गंध; १०.थी १४. पंचमहाभूत - पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश; १५.थी १९. पांच कर्मेन्द्रियो - वाणी, हस्त, चरण, जननेन्द्रिय, गुदा; २०.थी २४. पांच ग्यानेन्द्रियो - आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा; २५. मन. २६.थी २८. त्रिगुणो - सत्व, रजस्, तमस्. आ २८ मूलभूत तत्वो ना द्‌वारा सृष्टि मां देखाता सर्वे जड-चेतन पदार्थो उत्पन्न थया छे. तेथी तेने 'ब्रह्म' नी 'कारण कोटि' कह्यु छे.

ब्रह्म नी त्रिजी 'कार्य कोटि' स्वरुप ए दृश्यमान जगत जेमां अनंत रुप, नाम अने कर्म प्रकट थयेला छे जेनी गणत्री थई शके नहीं. परंतु तेना बे प्रभेद गणी शकाय - १. 'समष्टि' रुप, जे सृष्टि नी समग्रतामां छे, अने २. 'व्यष्टि' रुप, जे प्रत्येक जड अने जीव परत्वे कहेवाय.

आ रीते 'प्रमेय' तरीके एक मात्र श्रीहरि होवा छतां तेने आपणे आ त्रण कोटी मां - स्वरुप, कारण अने कार्य रुपे समजी शकीए छीए. तेम छतां आपणे ए स्पष्टतया जाणवुं जोईए के आम अलग अलग समजवा छतां वास्तवमां 'ब्रह्म' एक छे, अखंड छे. तदर्थ श्रीमहाप्रभुजीनी विचार धाराने "अखंड ब्रह्मवाद" कहे छे. .... क्रमशः...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (१८)

****

.... क्रमशः......आ रीते एक मात्र 'प्रमेय' ब्रह्म ना स्वरुप ने त्रण कोटी (categories) - स्वरुप,कारण अने कार्य कोटीथी समजावी छे. कार्य कोटी एटले अनेक रुप, नाम, क्रिया युक्त आ दृश्यमान जगत. ब्रह्म नुं ज ते अन्य रुप होवाथी तेने 'ब्रह्म' नुं आधिभौतिक स्वरुप कहे छे. तेथी अन्य केटलाक कहे छे, तेम ते मिथ्या नथी, परंतु 'ब्रह्मात्मक' होई ब्रह्म जेटलुं ज सत्य छे, तेम श्रीमहाप्रभुजी नो स्पष्ट मत छे.

जगत ना स्वरुप विशे अनेक विचारधाराओए अलग अलग मत प्रकट कर्या छे. आ हकिकत नो खुलासो श्रीमहाप्रभुजीए शास्त्रार्थ प्रकरण मां करतां कहृयु छे के 'प्रपंच' अर्थात् जगत न तो सांख्य दर्शन माने छे तेम मात्र 'प्रकृति' अने 'पुरुष' ना संयोजनथी बनेलु प्राकृत छे, न ते न्याय-वैशेषिक दर्शन नी मान्यता मुजब परमाणुओथी घडायेलुं छे, न ते मायावादीओ बतावे छे तेम 'मायिक' एटले के मायाए उत्पन्न करेलुं छे, के न ते मीमांसको कहे छे तेम पाप-पुण्य अदृष्ट विगेरे ना प्रभाव वश प्रकट थयेलुं छे. स्वाभाविक रीते ते कोई असत् मांथी सत् रुपे जनित न होई शके !

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के जगत ए 'भगवत् कार्य' छे. तेम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के जेम माटीना लोंदामांथी घडो बनाववामां आवे तो माटी ने 'कारण' कहेवाय अने तेमांथी उत्पन्न थतां घडाने 'कार्य' कहेवाय. तेमां पण माटीमां थी मात्र धडाना रुप अने नाम मां रुपांतर थाय छे. तत्त्वतः बन्नेमां अभेद छे. तेवीज रीते अगाउ कहृयु तेम 'कारण' रुप ब्रहृम मांथी आ जगत (तेनी कार्य कोटी) रुपे रुपांतरित थयेलुं छे, तेथी ते ब्रहृम नुं 'कार्य', अर्थात् 'भगवत् कार्य' कहेवाय. तेथी बहृम अने जगतमां पण तत्त्वतः अभेद छे.

पोताना मतने श्रीमहाप्रभुजी 'अविकृत परिणाम वाद' द्‌वारा वधु स्पष्ट करे छे. जेवी रीते सोनानी लगडीमां थी विविध धरेणा - वींटी, बंगडी, बुट्‌टी वगेरे बनाववामां आवे त्यारे तेना अनेक रुप अने नाम तथा कार्य (उपयोग) पण बदलाई जता होय छे. परंतु ते घरेणामां सोनु 'तत्त्व' रुपे जेमनुं तेम रहे छे. लगडी घरेणामां परिणमित थवा छतां ते (सोनु) नष्ट थतुं नथी. तेथीज आपणे सोनाना स्थाने घरेणां पण तेज मुल्य आपी खरीदीए छीए. घरेणां ने गाळी देता ते पाछुं लगडीमां रुपांतरित थई जाय छे. आने 'अविकृत परिणाम' कहे छे कारण के रुपांतरित थवा छतां 'तत्त्व' मां विकृति आवती नथी.

एवीज रीते ब्रहृम जगत रुप बनवा छतां तेमां तत्त्व रुपे ब्रहृमनुं अस्तित्व रहेज छे. तेथी प्रलय थतां जगत ब्रहृम ना मूल स्वरुप मां प्रवर्तित थई जाय छे. आ रीते श्रीमहाप्रभुजी जगतनी ब्रहृमात्मकता सिद्‌ध करे छे. .... क्रमशः....... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (१९)

****

.... क्रमशः...... श्रीमहाप्रभुजी निबंध मां खुलासो करे छे के "प्रपंचो भगवत्कार्यस् तद् रुपो मायया अभवत्" (शा.प्र.२३). अर्थात् आ 'प्रपंच' एटले पंचमहाभूत -पृथ्वी,जल, वायु, तेज, आकाश ए पांच तत्त्वो नुं बनेलुं 'जगत' भगवाने पोतानी 'माया' नामनी शक्ति द्‌वारा तेमना पोतानामां थी उत्पन्न करेलुं 'कार्य' रुप छे.

भागवतमां भगवान नी विभिन्न बार शक्तिओ - श्रिया, पुष्टि, गिरा, ... इत्यादि नुं निरुपण करवामां आव्युं छे. तेमां 'माया', विद्‌या अविद्‌या नामनी शक्तिओ पण बतावववामां आवी छे. आ बधी भगवान ना रमण मां उपयोगी शक्तिओ छे, जेना द्‌वारा भगवान सर्वे कार्य करे छे. भगवान नी शक्तिओ स्वाभाविक रीते भगवाननी साथे जोडायेली होय छे, ते स्वतंत्रतया कार्य करी शकती नथी, केमके ते भगवान नी दासीरुपा छे.

भगवान नुं 'सर्वभवन सामर्थ्य', तेमनी माया शक्ति नुं एक रुप छे. तेनेज भगवाननुं 'कर्तुम-अकर्तुम-अन्यथा कर्तुम सामर्थ्य' कहे छे. तेना द्‌वारा ज भगवान पोते इच्छे ते कार्य करे छे. मायानुं

बीजु रुप 'व्यामोहिका' कहेवाय छे, ते मूल स्वरुप ने आवरण द्वारा ढांकी देवानुं तथा अन्यथा रुप प्रकट करवानुं कार्य करे छे.

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के ज्यारे भगवाने 'रमण करवा माटे अनेक रुप थवानी इच्छा करी त्यारे अन्य कोई बीजानो सहयोग कर्या विना पोते स्वतंत्र रुपे स्वात्मक जगत रच्यु छे. माया भगवान ने आधीन होवाथी जगत भगवाने रच्यु छे तेम कहेवाय, नहीं के केटलाक माने छे तेम माया द्वारा रचायेलुं गणाय. तेवी मान्यता भूल भरेली छे.

केटलाक 'जगत' माटे 'संसार' शब्द नो प्रयोग करता होय छे, परंतु ते बन्ने शब्दोना अर्थ भिन्न छे. तेथी तेनो भेद समजवो जरुरी छे. आपणे जोयु तेम प्रपंच अर्थात् जगत भगवत्कार्य छे तेथी भगवद्रुप -ब्रह्मात्मक छे, तेथी ब्रह्म जेवुं सत्य छे, शंकराचार्यजी कहे छे तेम मिथ्या नथी. आ वात 'सत्कार्यवाद' ना के 'अविकृत परिणाम वाद' ना सिद्धांतोथी पण स्पष्ट थाय छे. .... क्रमशः....... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२०)

****

.... क्रमशः .... श्रुति अनुसार "एकमेवाद्वितियम्" ब्रह्म प्रारंभ मां एकला ज हता. अन्य कांई ज न हतुं. परंतु एकला थी 'रमण थई शके नहीं. तेथी तेने स्व-रमण माटे अनेक थवानी इच्छा करी. "एकोहम् बहुस्याम प्रजायेय". श्रीमहाप्रभुजी निबंध मां कहे छे -'हुं पोते एक होवा छतां अनेक रुपो धारण करुं तेवो ब्रह्मे सत्य संकल्प कर्यो. ब्रह्म देश-काल अपरिच्छिन्न होवा छतां तेणे लीलार्थे परिच्छिन्नता प्रकट करी छे.

'सच्चिदानंद' ब्रह्म मां सत्, चित् आनंद ए त्रण घटको छे. जेवी रीते अग्नि मांथी तणखा झरे तेम सृष्टि ना आरंभमां ब्रह्म नी ईच्छा ना कारणे ते त्रणेय घटकोना अंश तेमनामांथी व्युच्चरित थया (छुटा पड्या)छे. तेना 'सदंश'मांथी जड पदार्थो, 'चिदंश' मांथी जीवो अने 'आनंदांश' मांथी अंतर्यामि प्रकट थयाछे.

वास्तवमां 'ब्रह्म' बहार कशुंज नथी कारणके जे समग्रपणे व्यापीने रहेल छे तेनेज 'ब्रह्म' कह्युं छे. तेथी स्वाभाविक प्रश्न थाय के आ बधा अंशो क्यां छुटा पड्या हशे. तेने समजाववा कहे छे के जेम समुद्रमां लहेरो (तरंग) उठे, ते समुद्रमां ज होय छे, तेम ब्रह्म ना बधा ज अंशो ब्रह्म मां स्थित रहेला छे. तेथी श्रीमहाप्रभुजी कहे छे - "अनन्तमूर्ति तद् ब्रह्म हि अविभक्तं विभक्तिमत्". (शा.प्र. २६), अर्थात् ब्रह्म मां प्रकट थयेला अनंत (असंख्य) मूर्त (परिच्छिन्न) रुपो ब्रह्म मां ज प्रकट थयाछे. अपरिच्छिन्न ब्रह्म नुं परिच्छिन्न बनवा छतां तेने खंडित नथी करतुं. ते बताववा माटे अहीं 'अविभक्त' कह्यु छे. आम जड-जीवात्मक जगत- रुप बनवा छतां ब्रह्म अखंडित ज रहे छे. तदर्थ श्रीमहाप्रभुजीना मतने 'अखंड ब्रह्मवाद' कहे छे.

जेवी रीते जीवोनो उद्गम बताव्यो छे, तेज प्रकारे 'सच्चिदानंद'ना 'आनंदांश' मांथी अनेक अणुरुप जीवात्मा नी माफक अनेक अंतर्यामिओ पण प्रकट थया छे, जे प्राणीमात्र मां जीवात्मानी साथे स्थित रहे छे. आ वात नुं प्रतिपादन 'मुंडकोपनिषद' पण करतां कहे छे के 'वृक्ष नी एक डाली पर पासे पासे बे पक्षी बेठा छे, जेमां नुं एक (जीवात्मा) ते वृक्ष ना फलनो उपभोग करे छे, ज्यारे बीजु (अंतर्यामि) साक्षीवत्

जोई रहे छे. 'अंतर्यामि' एज आपणा सौना भीतर रहेल 'परमात्मा' छे. 'ब्रह्म'ने ज जीवात्मा ना संदर्भमां 'परमात्मा' कहेवाय छे. .... क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२१)

****

.... क्रमशः...... आ प्रमाणे 'सच्चिदानंद' ब्रह्म ना त्रण घटक तत्वो सत्, चित् अने आनंद मां थी असंख्य अंशो अनुक्रमे जड (पदार्थो), जीवात्मा अने अंतर्यामि स्वरुपे व्युच्चरित थया (छुटा पड्या). आ विशे श्रीमहाप्रभुजीए एक महत्वपूर्ण खुलासो निबंध (शास्त्रार्थ प्रकरण -२९/३०) मां कर्यो छे. तेओ समजावे छे के, कारण के ब्रह्म मां सत-चित-आनंद तत्वो विघटित रुपे नथी, परंतु ब्रह्म अखंड (homogeneous) छे, तेथी ते तत्वो अंश रुपे छुटा पडतां 'सदंश'मांथी 'चिदांश' तथा 'आनंदांश' लीन थई जाय छे अने 'चिदांश' मांथी 'आनंदांश' लीन एटले तिरोहित थई जाय छे. ज्यारे ब्रह्म नी अपरिच्छिन्नता ने बदले 'आनंदांश' अंतर्यामि रुपे परिवर्तित थतां तेमां परिच्छिन्नता प्रकट थती होय छे.

ब्रह्म नुं कृष्ण स्वरुपे साकारत्व 'आनंद' तत्वने कारणे प्रकट थाय छे. कृष्ण ब्रह्म ना आनंद रस नुं घनीभूत स्वरुप छे. तेथी आपणे समजी शकीए छीए के सदंश अने चिदंश मांथी केमके, 'आनंदांश' नो लोप थई जतो होय छे, तेथी ते बन्ने आकार रहित बनी जता होय छे.

आपणे जाणिये छीए तेम श्रुति वचन "एकमेवाद्वितियम्" प्रमाणे ब्रह्म एक अने अद्वितिय छे. तदर्थ ब्रह्म ना सदंश, चिदंश तेमज आनंदांश नो ब्रह्म नी साथे अभेद छे. अर्थात् आ अंशो अलग अने ब्रह्म अलग तेवी भिन्नता नथी. ते ते अंशो थकी ब्रह्मनो ज जड जीव अने अंतर्यामि रुपे उद्भव छे. ए त्रणेय रुपो जगतमां विद्यमान छे. माटेज आपणे समजी शकीए के आ जगत ब्रह्म नुं बीजु स्वरुप (आधिभौतिक) छे. तदर्थ ते ब्रह्म जेटलुं ज सत्य होय, मिथ्या नथी.

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के आ सर्व जगत ब्रह्मरुप होवा छतां जड, जीव अने अंतर्यामि एम त्रण प्रकारनो जुदो जुदो व्यवहार अनुभवाय छे. उपरोक्त विश्लेषण थी ए पण स्पष्ट थाय छे शा माटे जगतमां जड अने चैतन्य पदार्थो आनंद रहित छे, निरांनद छे. जेने आपणे आनंद मानता होईए छीए ते विषयनो आनंद छे, आनंद नी भ्रमणा मात्र होय छे, तेथी ते शास्वत होतो नथी.

ए वात पण समजी शकाय छे के ईश्वर - कृष्ण नुं साकारत्व तेना आनंद तत्वने लीधे छे, नहीं के ते मायावादीओ माने छे तेम 'माया' ना कारणे, केमके श्रुति मां कोईपण ठेकाणे मायाथी परमात्मा नो आकार बताव्यो नथी. ..... क्रमशः...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्ल्भ वेदांत" (२२)

****

.... क्रमशः...... भगवान 'सृष्टि-लीला' कई रीते करे छे ते समजाववा श्रीमहाप्रभुजी निबंध ना शास्त्रार्थ प्रकरण मां कहे छे - "विद्या अविद्ये हरेः शक्ति माययैव विनिर्मिते". अर्थात्, भगवान नी 'सर्वभवन सामर्थ्य' रुप माया शक्ति ना बे रुप 'विद्या' अने 'अविद्या' नुं अहीं निरुपण करे छे. भागवत मां वर्णवेली भगवान नी बार शक्तिओ मां 'विद्या' अने 'अविद्या' पण छे. जीवात्मा रुपे भगवान जे प्रकारे विविध लीला करे छे तेमा निमित्त आ बन्ने शक्तिओ महत्व नो भाग भजवे

छे.

भगवान मांथी छुटो पडेलो जीव भगवाननो 'अश' छे. भगवान थी आलग थाय त्यारे तेमना अंश रुप होवाथी ते 'सच्चिदानंद' रुपज होय छे. ते जीवनी 'शुद्ध' अवस्था' होय छे. परंतु भगवान थी छुटा पडतां ते भगवान नी 'अविद्या' शक्ति ना संसर्ग मां आवे छे. तेना कारणे जीवात्मा पोतानुं मूल स्वरुप के ते भगवद् अंश छे ते विस्मृत थई जाय छे.

श्रीमहाप्रभुजी भगवान नी 'अविद्या' शक्ति ना पांच पर्वो बतावे छे, अर्थात् 'पंचपर्वा अविद्या' कही छे. ते पांच पर्वो छे - १.स्वरुप विस्मृति, २.अंतःकरणाध्यास, ३. प्राणाध्यास, ४. ईन्द्रियाध्यास, अने ५ . देहाध्यास. अध्यास नो अर्थ छे 'भ्रांति'. जीव पोताने भगवदंश न मानता देह, इन्द्रिय, प्राण तथा अंतःकरण ने पोतानो आत्मा अर्थात् पोतानी असली ओळखाण मानवा लागे छे, जे तेनी भ्रमणा मात्र होय छे.

जे पदार्थ वस्तुतः नथी छतां तेनी प्रतीति थाय अने पोताना आत्मा नी प्रतीति न थाय तेने 'अविद्या' है छे. जीव अने अंतःकरण बन्ने एकज छे, एवुं ग्यान थाय तेने अंतःकरण नो अध्यास कहे छे. तेवीज रीते ज प्राणाध्यास, ईन्द्रियाध्यास, तेमज देहाध्यास उत्पन्न थाय छे.

आवी रीते अध्यास थवाथी तेना धर्मो जीवनमां स्फुरे छे. तेथी आपणे कहेता होईए छीए के हुं दुबळो छुं, हुं जाडो छुं वगेरे. आनुं कारण आपणो 'देहाध्यास' छे. तेवीज रीते हुं काणो छुं, बहेरो छुं ईत्यादि अनुभव 'ईन्द्रियाध्यास' ना कारणे थाय छे; हुं भुख्यो छुं, के तृप्त छुं तेवी लागणी 'प्राणाध्यास' ने कारणे थाय छे. आपणने थतो हर्ष, शोक, हुं जाणुं छुं के नथी जाणतो तेवी समजना मूळमां आपणो 'अंतःकरणाध्यास' होय छे. आवा अध्यास ना कारणे जीवात्मा ने पोताना असली स्वरुपनी ओळख रहेती नथी, विस्मृत थई जाय छे...... क्रमशः..... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२३)

****

.... क्रमशः .... सामान्यतः लोक व्यवहार मां आपणे 'जगत' अने 'संसार'. ए बन्ने शब्दो एकज अर्थ मां वापरता होइए छीए. परंतु आपणे अगाउ जोयुं के जगत, जेमां असंख्य रुप-नाम युक्त जड-जीवात्मक पदार्थो / प्राणी सृष्टि नो आपणे अनुभव करीए छीए ते भगवाने ज पोतानी 'लीलार्थे' लीधेलुं स्वरुप छे, अर्थात् ते ब्रह्म नुं 'आधिभौतिक स्वरुप' छे. तेथी ते भगवान जेटलुं ज सत्य छे, शंकराचार्यजी कहे छे तेम मिथ्या के मायाए उभो करेलो भ्रम नथी.

परंतु जीव ने 'पंच पर्वा' अविद्या ने कारणे "हु पणा" अने "मारा पणा" ऩो भाव जाग्रत छे, अर्थात् तेनी जगत ना पदार्थो / व्यक्तियो प्रत्ये 'अहंता - ममता' उत्पन्न थाय छे, तेने श्रीमहाप्रभुजी "संसार" नी संग्या आपे छे. जगतना विषयो प्रत्ये नी 'विषयता' आपणो भ्रम होय छे जे वास्तविक नथी, तदर्थ ते मिथ्या छे. आम ब्रह्म अने जगत बन्ने 'सत्य' ज्यारे संसार 'मिथ्या' छे.

श्रीमहाप्रभुजी निबंध मां समजावे छे के -"पंचपर्वा तु अविद्या इयं यद् बद्धो याति संसृतिम्" (शा.प्र.-३३). अर्थात् अविद्या जे भगवान नी शक्ति छे, तेना पांच पर्वो मां बंधायेलो जीव संसार थी घेराई जतो होय छे, जेना कारणे ते जन्म-मरण ना चक्रमां फसाई जाय छे. ए अविद्या नोज प्रताप छे के जीवात्मा असमर्थता अने दुःख अनुभवे छे.

हकिकतमां तो जन्म-मरण नी अनुभूति जीवने थाय छे, खरेखर देह नो जन्म-मरण नथी, ते तो उत्पन्न थाय छे अने नाश थाय छे, छतां आपणे देहमां जन्म-मरण नो अनुभव करीए छीए. आ देह

पंचमहाभूतनो बनेलो जड छे जे भगवान नो 'सदंश' छे. तेना स्वरुपनी उत्पत्ति अने नाश थाय छे (हकिकत मां ते पंचमहाभूतमां विलिन थई जाय छे). तेवीज रीते 'चिदात्मा' (ते पण भगवान नो चिदंश छे) ऩो पण नाश नथी, अर्थात् तेने पण जन्म के मृत्यु नथी, ते शास्वत छे.

आथी समजी शकाय के 'जन्म-मरण' ऩो अनुभव जीव ने 'पंच पर्वा अविद्या' ने कारणे, तेना अध्यासने कारणे थाय छे, केमके ते पोताना स्वरुप- अग्यान ने लीधे पोताना देह, ईन्द्रियो, प्राण, अंतःकरण ने पोते होवानुं मानी बेठो होय छे.

.... क्रमशः....... (डो जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२४)

****

.... क्रमशः...... आपणे जोयुं के संसार उत्पन्न थवा मां निमित्त भगवान नी 'अविद्या' शक्ति छे. तेना कारणे जीव बंधनमां आवी ने दुःखी थाय छे . तो स्वाभाविक प्रश्न थाय के 'संसार' नी निवृत्ति नो उपाय शुं ?

श्रीमहाप्रभुजी निबंध (शा.प्.) मा, समजावे छे के "विद्यया अविद्या नाशेतु जीवो मुक्यो भविष्यति". पंचपर्वा अविद्या ऩी माफक भगवान नी 'पंचपर्वा विद्या' शक्ति छे. तेना पांच पर्वो छे - सांख्य, योग, तप, वैराग्य अने भक्ति. आ विद्या थी ज्यारे अविद्या नो नाश थई जाय त्यारे जीवनो संसार निवृत्त थई जवाथी तेनी मुक्ति थाय छे.

अहीं ए समजवुं जोईए के अविद्या नो नाश थतां देह, ईन्द्रियो, प्राण, अंतःकरण नष्ट थता नथी, परंतु जीवनी चेतनामां तद्‌विषयक 'अध्यास' निवृत्त थाय छे. ते अध्यास अर्थात् भ्रांति ने तो संसार कह्यो छे, जे दूर थाय छे, परंतु देह ईन्द्रियादि तो भगवद् रुप होई ते मिथ्या न हो शके, ते तो वास्तविक छे, तेथी तेनो नाश थतो नथी. श्रीमहाप्रभुजी वधु खुलासो करतां कहे छे के जीवन-मुक्त ग्यानी जनोनो देहादिकमां अध्यास दूर थतां तेने पोताने तेनो अनुभव थतो नथी परंतु अन्य मनुष्योने ते जीवन-मुक्त ना देहादि देखाय छे.

वधु स्पष्टता करतां श्रीमहाप्रभुजी एक महत्व नो खुलासो करे छे. 'विद्या' अने 'अविद्या', बन्ने भगवान नी शक्तिओ छे. परंतु तेमणे प्रथम विद्या नुं निरुपण न करतां अविद्या नु कार्य समजाव्यु छे. तेनुं कारण बतावे छे के संसार नी उत्पत्ति मां 'अविद्या' पहेला लागु पडे छे. जो विद्या शक्ति नो प्रभाव प्रथम थाय तो 'अविद्या'नुं अस्तित्व ज न रहे, ते नष्ट थई जाय ! आम जीवने बंधन अने मुक्ति नी प्रक्रिया अने तेना कारणे जन्म-मरण ना चक्कर मां भगवान नी 'अविद्या' - 'विद्या' शक्ति नुं बहु मोटुं योगदान छे. .... क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२५)

****

.... क्रमशः ...... आपणे अगाउ जोयुं तेम, भगवान नी 'विद्या' शक्ति द्वारा अविद्या ना पर्व रुप देह, ईन्द्रियो, अने प्राण ना अध्यास नी निवृत्ति थाय छे, अर्थात् जीवात्माने पोते देह -ईन्द्रियो-प्राण छे तेवी खोटी भ्रांति दूर थाय छे, परंतु ते सर्वे नो प्रत्यक्ष रुपे लय (नाश) थतो नथी, कारण के ते तो

भगवत् कार्य रुप जगत नो हिस्सो छे. तेथी व्यक्तिने पोताने तेनो अनुभव न थतो होवा छतां अन्य ने तो ते सर्वे देखाय छे.

अहीं श्रीमहाप्रभुजीए एक खुलासो कर्यो छे के, देह-ईन्द्रियो-प्राणना अध्यास नी निवृत्ति संपुर्ण पणे थाय छे परंतु अंतःकरण नो अध्यास कांईक अंशे रहेतो होय छे. आ हकिकत निंद्रानां उदाहरण थी समजावी छे. जेवी रीते जाग्रत अवस्था थी दबाईने निंद्रा बुद्धि मां स्थित थाय छे, अर्थात् उंघता माणसने ग्यान होतुं नथी, परंतु ते जागे त्यारे तेने ग्यान थाय छे तेम विद्या थी अविद्या छुपाई जई पोतानी कारणभूत माया मां स्थिति करे छे. आम अविद्या नी स्थिति थी कंईक अध्यासयुक्त अंतःकरण मां अविद्या व्याप्त रहे छे.

आपणे कदाच एम मानी बेसीए के देहादि नुं संपुर्ण विस्मरण तो मृत्यु समान गणाय, परंतु, केवळ विस्मरण थवुं ते मृत्यु नथी कारण के निंद्रामां पण आपणने देह वगेरे नुं भान होतुं नथी, अर्थात् केवळ विस्मरण ए मृत्यु नथी. आम देहादि नो अध्यास दूर थाय त्यारे जीव 'मुक्तात्मा' बने छे. तेनेज 'जीवनमुक्ति' कहे छे. अहीं आपणे स्पष्टपणे समजी शकीए छीए के अध्यास दूर थतां अहंता-ममतात्मक संसार नो नाश थाय छे, परंतु प्रपंच (जगत) विद्यमान रहे छे, तेथी संसार अने जगत बन्ने भिन्न छे. प्रथम 'मिथ्या' छे, बीजुं ब्रह्म जेटलुं सत्य छे.

आपणने संदेह थाय के ज्यारे विद्या द्वारा देहादि नो अध्यास दूर थवा छतां तेनुं अस्तित्व रहे छे तो पूनः संसार उत्पन्न थई शके छे ! तदर्थ श्रीमहाप्रभुजी शास्त्रार्थ प्रकरण मां खुलासो करे छे के 'आसन्य' एटले प्राणोनी उपासना करवाथी अथवा भगवद् सेवा करवाथी आपणा देह, ईन्द्रियो नो विनियोग प्रभुना थवाथी तेनो पंचमहाभूतमां लय थई जाय छे अने जीवनो ब्रह्मभाव थवाथी ब्रह्म मां लय थाय छे जेथी तेवी शक्यता रहेती नथी.

आ वातने भागवत ना प्रमाण थी समजावतां कहे छे के 'कर्म, तप,ग्यान, वैराग्य आदि साधनो करवाथी जे फल सिद्ध थाय छे, ते फल भक्त ने भक्ति द्वारा प्राप्त थाय छे'. भगवाने त्यां उद्धवजी ने संबोधी ने कह्यु छे के "स्वर्ग, मोक्ष, मारो लोक, अने जे कांई तुं ईच्छे ते सर्व पदार्थ मारी भक्ति करवाथी भक्त ने प्राप्त थाय छे". (भा. ११.२०.३२-३३). आम भगवद् भक्त ने देह, ईन्द्रियो वगेरे नो लय 'भगवद् भक्ति' करवाथी थाय छे. आम श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के 'संसार'मां थी छुटवानो उपाय मात्र 'भगवद् भक्ति' छे. तदर्थ तेओ चतुःश्लोकी ग्रंथ मा आग्या करे छे -"स्मरणं भजनं न त्याज्यम्". .... क्रमशः....... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२६)

****

.... क्रमशः...... आपणे जोयुं तेम भगवान नी विद्या-अविद्या शक्ति नुं तेमनी सृष्टि-लीला मां खुब महत्वनुं योगदान छे. श्रीमहाप्रभुजी 'शास्त्रार्थ-निबंध' मां समजावे छे के भगवान अनेक प्रकारे सृष्टि नी रचना करे छे. वेदमां सृष्टि प्रकट करवाना अनेक प्रकार बताव्या छे. अगाउ वर्णन कर्युं तेम भगवान पोताना अक्षरब्रह्म स्वरुप थी प्रकृति-पुरुष, तेमांंथी 'कारण कोटि' ना मूळ तत्वो द्वारा कार्य रुप जगत मां परिणमित थाय छे, (जेनुं निरुपण भागवत-तृतीय स्कंधमां करवामां आव्युं छे).

बीजो प्रकार तैत्तिरिय उपनिषद वर्णवे छे तेम - भगवान पोताना स्वरुप मां थी आकाश उत्पन्न करी तेमांथी उत्तरोत्तर वायु, तेमांथी अग्नि, अग्निमांथी जल, जलमांथी पृथ्वी, पृथ्वी मांथी अन्न, तेमांथी

रस अने रसमांथी पुरुष, एम क्रमिक सृष्टि उत्पन्न करे छे. वळी नारद पंचरात्र मां वर्णव्या मुजब वासुदेव भगवान उत्तरोत्तर संकर्षण रुप जीव, प्रद्युम्न रुप मन, अने तेमांथी अनिरुद्ध रुप अहंकार प्रकट करे छे.

श्रीकृष्ण परब्रह्म परमात्मा क्यारेक स्वयं जड-जीव-अंतर्यामि रुप धारण करी क्रीडा करे छे त्यारे सृष्टि मां आनंद नो के चैतन्य नो कोई पदार्थ मां तिरोभाव करता नथी. आवी सृष्टि केवल लीलार्थे 'पुष्टिसृष्टि' होय छे. तेवीज रीते स्वप्नादि सृष्टि ना जेवी केवळ मायाथी भगवत्प्रवेश वगर इन्द्जाल वत् पण भगवान सृष्टि रचे छे.

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के आम अनेक प्रकार नी सृष्टि नुं वर्णन वेद मां करवामां आव्युं छे, ते भगवान नुं माहात्म्य जणाववा माटे छे, जोके भगवान पोते पोतानुं माहात्म्य प्रकट करवा सृष्टि नी रचना करता नथी, कारण के ते भगवान नो सहज स्वभाव छे, परंतु माहात्म्य जाणवा थी भगवान मां सहज स्नेह उत्पन्न थाय. तात्पर्य ए छे के वेदमां भक्ति नुं वर्णन छे, ते जणावायु छे. तेमनुं माहात्म्य जाणी ने तेमनामां स्नेह उत्पन्न थवो, तेनेज 'भक्ति' कहे छे.

तदर्थ श्रीमहाप्रभुजी भक्ति नी व्याख्या करे छे - "भगवान ना माहात्म्य ग्यान पूर्वक तेमनामां स्नेह थवो, तेने भक्ति कहे छे". तेओ कहे छे के जीवनी मुक्ति भक्ति करवाथीज थाय छे. वळी कहे छे के 'भगवान'ना माहात्म्य द्वारा 'आ देव छे', एम जाणीने प्रेम करवाने "भाव" कहेवाय छे, अने केवळ आ प्रकारना भावथी ज गोपी, गाय, पक्षी, मृग वगेरेने भगवान नी प्राप्ति थई छे.

अर्थात्, भगवद् प्रेम नी पृष्टभूमि मां भगवान ना माहात्म्यनुं ग्यान रहेलुं छे, ते समजाव्यु छे. ...... क्रमशः........ (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२७)

****

.... क्रमशः...... श्रीमहाप्रभुजी 'भक्तिमार्ग' ना प्रवर्तक गुरु छे. तदर्थ तेमणे मुक्ति ना साधन तरीके 'भक्ति' नुं प्रतिपादन कर्युं छे (नि.शा. प्र.४ २). त्यांज भक्ति नी व्याख्या करतां तेमणे तेनां बे आवश्यक अंग बताव्या छे - १.भगवाननुं 'माहात्म्य ग्यान', अने २.भगवानमां 'सुद्रढ-सर्वतोधिक स्नेह'. त्यां अंतिम कारिका मां तो आ बन्ने अंगोनी महत्ता बतावतां श्रीमहाप्रभुजी कहे छे-"भगवान थकी सर्व छे अने भगवान सर्व रुप छे, एवुं तेमनुं 'माहात्म्य ग्यान', अने प्रेम सहित श्रवणादि साधन थी जे श्रीहरि ने भजे ते 'उत्तम भक्त' कहेवाय. प्रेमना अभावथी ग्यान सहित भजन करे, अथवा ग्यान रहित प्रेम थी जे भजे (अर्थात् बे अंग मां थी जे एकनेज महत्त्व आपे छे) ते मध्यम / हिन भक्त कहेवाय. वळी जो ग्यान अने प्रेम बन्ने न होय तो श्रवणादिक थकी ते पापनाशक थाय छे ! (स्पष्टतया ते भक्ति नथी ज) .(का.१०२) श्रीमहाप्रभुजी नो आ खुलासो 'भक्ति' नुं अवलंबन करनारे समजवो खुब जरुरी छे.

'भक्ति' विशे श्रीमहाप्रभुजीए समजाव्यु छे के उपनिषद मां कहेला "तत्वमसि" (छां.उ./६.७.७), अर्थात् 'ते तुज छे' तेम श्वेतकेतुने अनुलक्षीने कहेला वचनोनुं तात्पर्य वास्तवमां भजन नी सिद्धि माटे ज छे. त्या संपुर्ण वाक्य -"एतदात्म्यम् इदं सर्वम् तत्सत्यं स आत्मा तत्वमसि" द्वारा आ द्दश्यमान जगत अने जीव नो 'आत्मा' भगवान होवानुं सूचव्यु छे, अर्थात् जगत अने जीव बन्ने 'ब्रह्मात्मक' बताव्या छे. आम आ श्रुति वाक्य मां 'कार्य रुप' जगत विशे तेमज आत्मबोध बन्ने होवाथी आ वाक्य 'माहात्म्य ग्यान' पूर्वक स्नेह नुं प्रतिपादन करनार छे, ए वात सिद्ध करे छे.

आ कहेवानुं तात्पर्य ए छे के भगवान बधा देहधारीना 'आत्मा' छे. तदर्थ आपणी भगवानमां प्रीति सहज - निस्वार्थ होय छे. तेने 'निष्काम -निरुपाधि' प्रीति कहेवाय. (मनुष्य नी स्त्री-पुत्र-देह आदिमां स्वार्थवश सोपाधि-सकाम प्रीति होय छे). आम वेदमां भक्ति नुं अंग स्नेह छे तेम समजाव्यु छे. अगाउ जोयुं के स्नेह उत्पन्न थवानुं कारण भगवान नुं माहात्म्य-ग्यान छे.

श्रीमहाप्रभुजीए आ रीते भक्ति नी महत्ता ने समजावी छे, जे तेमना मते भगवद् प्राप्ति नो सरलत्तम उपाय छे, एटलुंज नहीं अन्य मार्गो -कर्ममार्ग / ग्यानमार्ग करतां भक्त ने कृतार्थ करनारो मार्ग छे.

जोके शंकराचार्यजीए "तत्वमसि", "अहं ब्रह्मास्मि" ईत्यादि श्रुति वचनोने 'महावाक्य' गणावी तेना आधारे जीव पोतेज ब्रह्म होवानुं प्रतिपादन कर्युं छे परंतु श्रीमहाप्रभुजीए तेमना निबंध ग्रंथ मांज तेमनी ए विचारधारा नो प्रमाणो तेमज तर्क द्वारा उच्छेद करेलो छे. ....क्रमशः.......   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत". (२८)

****

.... क्रमशः .... अगाउ जोयुं तेम छांदोग्य उपनिषद मां श्वेतकेतुने उद्देशीने पिता उदालके कहेलुं वाक्य "तत्वमसि" इत्यादि वाक्यो भक्ति ना अंगभूत स्नेहने दर्शाववा माटे कहेला छे. परंतु शंकराचार्यजी तेने "महावाकय" गणी 'ते तुंज छे', अर्थात् जीव ब्रह्म ज छे ते विचार नुं प्रतिपादक माने छे. तेमना आवा अर्थघटन विशे श्रीमहाप्रभुजीए शास्त्रार्थ प्रकरण मां खुलासो कर्यो छे.

तेओ समजावे छे के 'ते तुं पोते छे' एवुं वाक्य नुं गमे तेटली युक्तिओ पूर्वक मनन करवामां आवे तेथी जीव ब्रह्म बनी शके नथी. वास्तवमां आ शब्द -समुह समग्र वाक्य "एतदातेम्यम् इदं सर्वम्, तत्सत्यम् स आत्मा तत्वमसि" नो एक भाग छे जेमां दृश्यमान जगत तथा जीव, बन्ने ना 'आत्मा' रुप ब्रह्म होवानुं कहेवामां आव्युं छे, अर्थात् ते ब्रह्मात्मक छे, तेम सूचित करवामां आव्युं छे. वळी श्वेतकेतु भगवान नो अवतार न हतो के तेने माटे 'ते तुंज छे' तेम कहेवुं सुसंगत मानी शकाय. हकिकतमां तो आ उपाख्यानमां श्वेतकेतु नुं घमंड प्रदर्शित थाय छे, तदर्थ तेनी ब्रह्मरुपता होइ शकती नथी. कोई "अहं ब्रह्मास्मि" कहे अने जो तेनो अहं प्रकट थतो होय, तो तेनुं ब्रह्म होवुं अप्रस्तुत गणाय.

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के ब्रह्म 'सर्व रुप' छे. तेम छतां तेने जड अने जीव ना विभाजन द्वारा एटले छुटा पाडीने स्वीकारवा मां आव्युं छे. जड अने जीव परस्पर भिन्न होवा छतां ब्रह्म थी भिन्न ऩथी. आ एकज वाक्य मां जीव ने ब्रह्म रुप समजवुं अने जगत ने मायिक कहेवुं (शंकराचार्यजी) ते तर्क संगत नथी. अहीं ए स्पष्ट कर्यु छे के जीवनो ब्रह्म साथे अंश-अंशी संबंध होवाथी ते ब्रह्मात्मक छे, तेम जडनी ब्रह्मरुपतानो बोध ब्रह्म ना 'कार्य' रुप थी थाय छे. जेम सोनानी लगडी अने तेमांथी बनता घरेणामां सोनु स्वरुपभूत छे, तेम परमात्मा सर्व ना स्वरुप भूत छे. आम समजाववा माटेज उपरोक्त श्रुति वाक्य मां 'स आत्मा' मध्यमां मुकवामांं आव्युं छे. तेथी समजी शकाय के ते जड अने जीव बन्ने नुं ब्रह्म रुपत्व बताववा माटे छे.

आ रीते श्रीमहाप्रभुजी ए एक महत्वपूर्ण खुलासो करी "तत्वमसि" वाक्य ना भ्रांत अर्थघटन थी जीव ने स्वयं ब्रह्म ज होवानुं अने जगत ने मायिक गणवाना 'मायावादीओना मंतव्य नुं नीरसरण कर्युं छे. आनाथी तद्विषयक शुद्धाद्वैत मत स्पष्ट थाय छे.   ..... क्रमशः.......   (डो जयेन्द्र सोनी)

"वल्लभ वेदांत" (२९)

****

.... क्रमशः...... 'जगत' ना स्वरुप विशे सौथी विशेष मतभेद मायावादी विचारधारा साथे छे. तेओ 'विवर्तवाद' नो स्वीकार करवाने कारणे, (अर्थात् मूळ वस्तुमां फेरफार थया विना बीजुं देखाय तेने 'विवर्त' कहेवाय), ब्रह्म ने स्थाने 'जगत' देखाय छे, जे वास्तविक नथी, तेथी तेओ तेने 'मिथ्या' कहे छे. उदाहरण तरीके अंधारामां कोई लटकता सर्पने रस्सी मानी लेवामां आवे तेम. तेमना मते श्रुति वचन "एकमेवाद्वितियम्" प्रमाणे एक मात्र ब्रह्म नुं ज अस्तित्व छे. तदर्थ तेमनो मत 'केवलाद्वैत' कहेवाय छे, अर्थात् मात्र 'ब्रह्म' नुं ज अस्तित्व छे, परंतुं अग्यानवश, आपणे तेने जाणी शकता नथी, पण जगत रुपे मानीये छीए ते एक भ्रांति छे.

श्रीवल्लभाचार्यजी 'अविकृत परिणाम वाद" ने आधारे जगत ने ब्रह्म जेटलुं ज सत्य बतावे छे, कारण के ब्रह्म पोतेज जगत नुं 'उपादान' तेमज 'निमित्त' कारण, तथा 'कर्ता' पण छे. ज्यारे दुधनुं दहीं बने तो पूनः दहीं मां थी दुधमां प्ररिणमित थई शकतुं नथी, तेथी तेने 'विकृत परिणाम' कहेवाय छे. परंतु ज्यारे सोनानी लगडीमां थी विभिन्न दागीना बनाववा मां आवे, त्यारे तेनु रुप, नाम अने उपयोग जुदा जुदा होय छे. ज्यारे ते दागीना ने गाळीए त्यारे पूनः ते लगडी ना रुपमां आवी जाय छे. तेमां कोई विकार उत्पन्न धतो नथी. आ प्रकारना परिणाम ने 'अविकृत परिणाम' कहेवामां आवे छे.

तदर्थ, श्रीवल्लभाचार्यजी जगत ने ब्रह्म नुं 'अविकृत परिणाम' कहे छे, कारण के 'सत्कार्य वाद' ना सिद्धांत मुजब 'कार्य' 'कारणं मां पूर्व निहित होय छे, 'जेवीरीते तलमां तेलनुं अस्तित्व पहेलेथीज होय छे, तेथी तल तेल ना रुपमां परिणमित थाय छे. जगत पण तेना आविर्भाव पूर्वे ब्रह्म मां अस्तित्व धरावे छे. आनो खुलासो ब्रह्मसूत्र "भावे च उपलब्धेः" (२.१.१५) मां करवामां आव्यो छे. तेमां कहे छे - 'पदार्थ अस्तित्वमां होय तो ज तेनी उपलब्धि थई शके'.

तेवीज रीते जेम सोनामां थी दागीना रुपे परिणमित थतां अने रुप तेमज नाम बदलावा छतां तेमां सोनी नुं तत्त्व अकबंध रहे छे (दागीना रुपे पण ते सोनु ज होय छे), तेवी रीते श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के 'जगत' रुपे परिणमित थवां छतां ते 'ब्रह्मात्मक' ज होय छे. तेथी समजी शकाय छे के जगत पण 'ब्रह्म' जेटलुं ज 'सत्य' ज होय.

आ वात नो खुलासो श्रीवल्लभाचार्यजीए छांदोग्य उपनिषद ना वचन "एतदात्म्यम् इदं सर्वम् तत् सत्यम् स आत्मा तत्वमसि" ना संदर्भ मां कर्यो छे जेनी चर्चा आपणे पूर्व मां करी छे. .... क्रमशः..... (डॉ. जयेन्द्र सोनी).